3.1

वर्ष 33, अंक 3
नई दिल्ली
जून 2005

सम्पादक :
रामावतार गुप्त

मूल्य : 10 रु.
वार्षिक शुल्क : 100 रु.
आजीवन (पन्द्रह वर्ष) शुल्क : 1100 रु.
वि.सं.- ज्येष्ठ-आषाढ़ : 2062

श्रीहरि सत्संग-समिति मुंबई

रविवार को एक भव्य समारोह में श्री वेंकटेश मंदिर, फणसवाडी के प्रांगण में श्रीहरि सत्संग-समिति, मुंबई के अध्यक्ष श्री देवकीनंदन बूबना, कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सत्यनारायण काबरा सहित बड़ी संख्या में कार्यकारिणी के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे। संरक्षक श्री श्रीनिवास सोमानी के प्रयास से मंदिर ने गत वर्ष साढ़े सात (7.50) लाख रुपये देकर एक रथ वनवासी क्षेत्रों के लिए प्रदान किया था। उसकी उपयोगिता देखकर इस वर्ष भी मंदिर के ट्रस्टियों ने एक रथ के 7 लाख रुपये तथा 3 लाख रुपये राम-साधक-योजना में देने का प्रण किया। इस अवसर पर शाम को विधि के साथ पूजा-अर्चना की गयी। श्री निवास सोमानी ने 10 लाख रुपये का चैक अध्यक्ष श्री बूबना जी को प्रदान किया। इसी समय श्री बूबना जी ने भाव-विभोर होकर स्वयं श्री विश्वनाथ भरतिया के साथ 7.50 लाख रुपये एक रथ को देने की घोषणा की। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री स्वरूपचंद गोयल और कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सत्यनारायण काबरा ने मंदिर के ट्रस्टियों का आभार प्रगट किया और आह्वान किया कि मुंबई में अन्य मन्दिरों के ट्रस्टी भी वनवासी बंधुओं की सहायता के लिए आगे आयें। साथ ही मंदिर की प्रबंध समिति को प्रार्थना की गई कि प्रतिवर्ष इस क्रम को चालू रखा जाए। ■

मंगल-मिलन के संरक्षक

श्री नरेश कुमार गुप्ता,
सी-320,
विवेक विहार,
नई दिल्ली-110095
फोन: 9810221003

श्री राम कंवार गुप्ता
महावीर बुक डिपो,
2603, नई सड़क,
दिल्ली-110006
फोन: 23262993

श्री गोपीराम गुप्ता
जे-143,
कालकाजी,
नई दिल्ली-110019
फोन: 9810982005

श्री पवन कुमार
अशोक मोहल्ला,
नांगलोई,
दिल्ली-110043
फोन: 9810538341

श्री चन्द्र प्रकाश अग्रवाल
ए-20,
विवेक विहार,
नई दिल्ली-110095
फोन: 22159969

श्री जगदीश गर्ग
जगदीश पेपर मार्ट,
चावड़ी बाजार,
दिल्ली -110006
फोन: 23273440

श्री नंदकिशोर जिंदल
91, बांके बिहारी कालोनी,
प्रिया कुंज, 113
मणिकुटीर, वृन्दावन
फोन: 0565-256356

श्री विजेन्द्र मित्तल
अपरा बिल्डर्स लि.,
डी-210 सेंट्रल मार्केट,
प्रशान्त विहार, दिल्ली-85
फोन: 9810516560

श्री विनोद कुमार बिंदल
बी-2,
विवेक विहार
दिल्ली-110095
फोन: 22153569

श्री शिवदत्त गुप्ता
डी-9,
कमला नगर,
दिल्ली-110007
फोन: 31171821

श्री हरीश गुप्ता
मैटाक्राफ्ट,
गली नीलावली,
दिल्ली-110006
फोन: 23235523

श्री रामेश्वर दास गुप्ता
ए-22, पंचवटी
दिल्ली-110033
फोन: 27132477

श्री राजीव गोयल
सी-63,
विवेक विहार,
नई दिल्ली-110095
फोन: 22152292

श्री जगदीश चन्द्र गुप्ता
डी-20,
कमला नगर,
दिल्ली-110007
फोन: 23844021

डॉ. रामकुमार अग्रवाल
ए-2/3,
जनकपुरी,
दिल्ली-110058
फोन: 25527444

श्री नंदकिशोर बगड़ेदिया
सी-69,
साउथ एक्सटैंशन-2,
नई दिल्ली-110049
फोन: 26258899

श्री कैलाश गोयल
ए-152 बी,
विवेक विहार,
दिल्ली-110095
फोन: 22151232

श्री प्रवीण गोयल
231,
विवेकानन्दपुरी
दिल्ली-110007
फोन: 23692718

श्री राजेन्द्र प्रकाश गोयल
सोना-चाँदी धाम, 528-ए,
महाराजा अग्रसेन मार्ग,
शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन: 9811667151

श्री जुगलकिशोर अग्रवाल
डब्ल्यू-39,
ग्रेटर कैलाश-2,
नई दिल्ली-110048
फोन: 9810021015

श्री श्याम सुन्दर लाल
श्याम प्रेस,
किन्टी गंज,
दिल्ली-110006
फोन: 23523926

श्री नरेश गुप्ता
221,
विवेकानन्दपुरी
दिल्ली-110007
फोन: 9811116633

श्री ओम प्रकाश सर्राफ
60/16, रामजस रोड़,
करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
फोन: 25718572

श्री जगदीश मोदी
15/199,
मालवीय नगर,
दिल्ली-110017
फोन: 26461229

श्री देवेश गुप्ता
111,
माडल बस्ती
दिल्ली-110006
फोन: 9810022366

श्री पी.सी. सिंघल
भोलानाथ नगर,
शाहदरा,
दिल्ली-110032
फोन: 22306274

श्री रामनिवास जिंदल
5 सी/9,
न्यू रोहतक रोड,
दिल्ली-110005
फोन: 9868140047

श्री ब्रजभूषण अग्रवाल
261,
कोटला मुबारिकपुर,
नई दिल्ली-110003
फोन: 9810112488

श्री पुरुषोत्तम शोरेवाला
4527,
क्लाथ मार्केट,
दिल्ली-110006,
फोन: 9810099740

श्री प्रहलाद राय गुप्ता
9667/7, सदर थाना रोड
मुल्तानी ढांडा, पहाड़गंज
दिल्ली-110055
फोन: 9312298616

श्री चन्द्रभान मित्तल
309, ए-नवादा रोड,
नजफगढ़,
नई दिल्ली-110043
फोन: 9810346720

श्री मती उषा अग्रवाल
261,
कोटला मुबारिकपुर,
नई दिल्ली-110003
फोन: 24620694

श्री जवाहरलाल अग्रवाल
4101 नया बाजार,
दिल्ली-110006
फोन: 23930070

श्री ओम प्रकाश बिंदल
जी-57,
ईस्ट आफ कैलाश,
नई दिल्ली-110065
फोन: 23676603

श्री बाल भगवान अग्रवाल
350 ए, नवादा रोड,
नजफगढ़ रोड,
नई दिल्ली-110043
फोन: 9891366322

मंगल-मिलन के संरक्षक अथवा सलाहकार बोर्ड के सदस्य बनने के इच्छुक कृपया संपर्क करें:-

श्री रामावतार गुप्त, मो.: 9810029114

पद्मासन

-रामेश्वरदास गुप्त, डी-35, साउथ एक्सटेंशन-एक, नई दिल्ली-110049

पद्म कहते हैं कमल को। इस आसन में बैठने पर शरीर की स्थिति और उसका आकार खिले हुए कमल के समान बन जाता है। इसीलिए योगियों ने इस आसन का नाम पद्मासन रखा है। इसे कमलासन भी कहते हैं।

पद्मासन एक महत्वपूर्ण और सर्वश्रेष्ठ आसन है। इसके अभ्यास से वात-रोग और कब्ज़ का निवारण होता है। पाचन-शक्ति बढ़ती है, भूख खूब लगती है, शक्ति बढ़ती है, टाँगों के गठिया आदि रोगों में लाभ पहुंचता है, हृदय और चर्म रोगों में लाभकारी है और कटि और उसके नीचे के अंगों में रक्त की भरपूर आपूर्ति होती है। इसलिए इसके अभ्यास से कटि और बस्ति के क्षेत्र की नस-नाड़ियाँ लचीली और सुदृढ़ हो जाती हैं। इसके अभ्यास से ब्रह्मचर्य की रक्षा में सहायता मिलती है। मन शांत और स्थिर होता है। प्राणायाम करने, ध्यान लगाने और साधना करने के लिए पद्मासन सर्वश्रेष्ठ आसन है। पद्मासन में ध्यान लगाते अथवा साधना करते समय अपनी दृष्टि नासाग्र अथवा भ्रूमध्य पर टिकानी चाहिए।

नए साधकों को पद्मासन अधिक समय तक नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से किसी अंग में पीड़ा होने की संभावना रहती है। उन्हें धीरे-धीरे अभ्यास करते हुए साधना में आगे बढ़ना चाहिए।

पद्मासन की विधि का जहाँ तक सम्बन्ध है समतल एवं साफ-सुथरी भूमि पर नरम दरी बिछाकर बैठ जाइए। दोनों टाँगों को सामने की ओर फैला दीजिए। अब दाहिनी टाँग को घुटने से मोड़िए। (मोड़ने में यदि कुछ कष्ट का अनुभव हो तो जहां तक मोड़ सकते हैं, वहीं तक मोड़कर, उसी अवस्था में कुछ देर बैठिए। फिर धीरे-धीरे दो-चार दिन में आपकी टाँग सरलतापूर्वक मुड़ने लग जाएगी) अब अपनी दाहिनी टाँग के गट्टे को, दाहिने हाथ से पकड़िए और दाहिने पैर के पंजे को अपने बाएं हाथ से पकड़िए। फिर दोनों हाथों का सहारा देकर, दाहिनी टाँग को थोड़ा ऊपर की ओर उठाते हुए, अंदर की ओर खींचिए। दोनों हाथों के सहारे से दाहिनी टाँग की एड़ी को, बाई जाँघ के मूल में सटा लीजिए। अब बाई टाँग को घुटने से मोड़िए और बाई टाँग के गट्टे को बाएं हाथ से पकड़िए। बाएँ पैर के पंजे को दाहिने हाथ से पकड़िए। दोनों हाथों का सहारा देकर, थोड़ा ऊपर उठाइए और बाएं पैर की एड़ी को दाई जाँघ के मूल में सटा दीजिए।
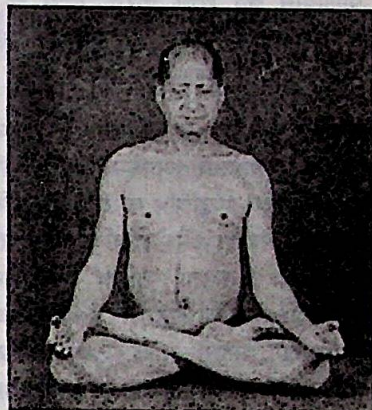
अब दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों को, दोनों अंगूठों के मूल में, बीच में अथवा सिरे पर लगाइए और बाकी तीनों अंगुलियों को आपस में मिलाकर सीधी फैला दीजिए। ज्ञानमुद्रा की अवस्था में दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर रख लीजिए। आप चाहें तो बाई हथेली के ऊपर, दाई हथेली को रखकर, ब्रह्मांजलि की स्थिति में भी रख सकते हैं। कमर, पीठ, गर्दन और रीढ़ सीधी रखिए। आँखें कोमलता से बंद कर लीजिए। आप चाहें तो आंखें अधखुली भी रख सकते हैं। यह इस आसन की पूर्ण स्थिति है।

पद्मासन टाँगों को बदल कर अर्थात् बाई एड़ी को पहले दाएं जंघामूल में, बाद में दाई एड़ी को बाएं जंघा-मूल में सटाकर भी कर सकते हैं।

आरम्भ में पाँच-दस सैकिण्ड ही पद्मासन में बैठना पर्याप्त होगा। अभ्यास हो जाने पर प्राणायाम करने के लिए, ध्यान लगाने के लिए या साधना करने के लिए, आप अपनी सामर्थ के अनुसार कई घण्टे भी इस आसन में बैठ सकते हैं। पद्मासन सधने से सारे शरीर में विद्युत् का संचार आरम्भ हो जाता है। ज्ञान-मुद्रा में तर्जनी अंगुली ऋण-विद्युत् (नैगेटिव) का कार्य करती है और अंगूठा धन-विद्युत् (पोज़िटिव) का कार्य करता है। इससे सारा शरीर प्रकाशमान हो जाता है। विद्युत् बाहर नहीं निकलती। ■

शीतली प्राणायाम

हे साधको और साधिकाओ! आज हम एक ऐसे प्राणायाम की चर्चा करेंगे, जिस के अभ्यास से शरीर में शीतलता (ठंडक) आ जाती है। इसीलिए इस प्राणायाम को 'शीतली प्राणायाम' कहते हैं।

शीतली प्राणायाम के अभ्यास से रक्त शुद्ध हो जाता है और आलस्य दूर होकर स्फूर्ति आ जाती है। यह उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह अजीर्ण और पित्तविकार में लाभ करता है और शरीर में शीतलता, शक्ति और कान्ति उत्पन्न करता है। इससे सुन्दरता बढ़ती है। आँखों और चर्म रोगों जैसे-सफेद दाग, मुहासे आदि में भी लाभप्रद है। मुँह में छाले पड़ जावें, ज़बान खुश्क हो जावे या ज़बान फटती हो तो उनके लिए भी यह हितकर है। गले के रोगों, टाँसल आदि में यह आराम देता है। प्यास को शांत करने और क्रोधी स्वभाव को ठंडा करने में उपयोगी है। आचार्य केशव देव का कहना है कि शीतली प्राणायाम का प्रतिदिन 100 बार अभ्यास करने से श्वेत कुष्ठ, रक्तकुष्ठ, एग्ज़ीमा आदि भंयकर रोग दूर हो जाते हैं।

दरी या कम्बल पर पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन लगाकर बैठ जाइए। कमर, पीठ, गर्दन तथा रीढ़ सीधी रखिए। दोनों हाथों को ज्ञानमुद्रा की स्थिति में घुटनों पर रखें। आँखें बंद करके शांत-भाव से बैठिए। आरम्भ में दोनों नथुनों द्वारा रेचक कीजिए। अब ज़बान को बाहर निकालिए। इसके दोनों किनारों को ऊपर की ओर उठा कर मोड़िए और इसे गोल करके नली के समान बनाइए। इस प्रकार ज़बान की आकृति कौए की चोंच के समान बन जावेगी। अब ज़बान की इस नलकी में से धीरे-धीरे पूरक कीजिए। गहरी और लम्बी साँस द्वारा वायु को पेट में कंठ तक भर लीजिए। अब ज़बान को अंदर करके मुँह बंद कर लीजिए। कुम्भक लगाइए। जितनी देर सरलतापूर्वक कुम्भक लगा सकते हैं, लगाइए। अंत में दोनों नथुनों से रेचक करके, थोड़ा आराम कीजिए। आरम्भ में तीन बार दोहराइए। धीरे-धीरे पन्द्रह-बीस बार तक बढ़ा सकते हैं। शीतली प्राणायाम गर्मी के मौसम में करना चाहिए, सर्दी में नहीं। कफ-प्रकृति, नजला, जुकाम, खाँसी आदिके रोगियों को भी यह प्राणायाम नहीं करना चाहिए।
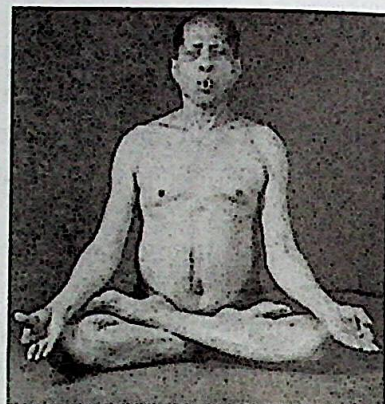
--रामेश्वरदास गुप्त द्वारा रचित 'प्रैक्टिकल प्राणायाम' नामक पुस्तक से साभार

श्री रमेश गोयल पुनः अध्यक्ष बने

भारत-विकास-परिषद हरियाणा पश्चिम के वर्ष 2005-06 के लिए प्रान्तीय अध्यक्ष के रूप में श्री रमेश गोयल, आयकर सलाहकार सिरसा का सर्वसम्मति से पुनः निवार्चन किया गया। श्री गोयल शाखा-अध्यक्ष, प्रान्तीय कार्यकारिणी- सदस्य व 3 वर्ष प्रान्तीय उपाध्यक्ष रहने के बाद वर्ष 2004-05 के लिए प्रान्तीय अध्यक्ष चुने गए थे और इस अवधि में उन्होंने परिषद की उद्देश्य-पूर्ति के साथ-साथ परिषद के सदस्यों को प्रान्तीय टीम के माध्यम से प्रांत व केन्द्र के कार्यक्रमों के साथ प्रत्यक्ष रूप से जोड़ने का सफल प्रयास किया, जिसकी केन्द्रीय पदाधिकारियों ने भी प्रशंसा की।

श्री गोयल स्थानीय, प्रान्तीय व राष्ट्रीय स्तर की कई संस्थाओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। हरियाणा प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के विभिन्न पदों पर रहने वाले श्री गोयल अपना पूरा व्यावसायिक कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही करते हैं। अग्रोहा मेडिकल कालेज की प्रबन्ध-समिति के सदस्य श्री गोयल परिषद के पाँच सूत्रों—सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा व समर्पण-भाव से समाज सेवा में कार्यरत हैं। ■
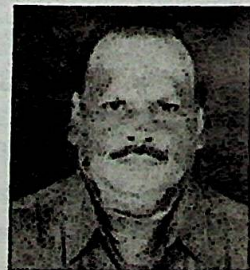
भगवानों से सावधान

-स्वामी प्रज्ञानन्द

आज धर्म की अवधारणा के संबंध में जितनी भ्रांतियाँ हैं, उतनी पूर्वकाल में कभी नहीं रहीं। यह सर्वविदित तथ्य है कि भ्रांति अशांति की जननी है तथा अशांति क्रान्ति का आह्वान है, आमंत्रण है। संसार के अनेक स्थलों पर धर्म ने एक सुव्यवस्थित व्यापार तथा योग ने एक उद्योग का रूप ग्रहण कर लिया है। फलस्वरूप धर्म की स्पष्ट अवधारणा के अभाव में धर्माचार्यों तथा कथित गुरुओं, सन्तों, महन्तों, अवतारों एवं भगवानों से धर्म को सर्वाधिक खतरा पैदा हो गया है। यह सार्वभौम सत्य है कि मंत्री को अपने अंगरक्षक से, गुरु को शिष्य से, भगवान को भक्त से, नेता को अनुयायी से और मन्दिर को पुजारी से जितना भय अथवा खतरा रहता है, उतना किसी अन्य से नहीं।

जनसंख्या के साथ भक्तों, महंतो, गुरुओं, आचार्यों, अवतारों एवं भगवानों की संख्या में भी अभिवृद्धि हुई है। 1962 की जनगणना के अनुसार लगभग सात लाख ग्रामों वाले हमारे देश में साधुओं की संख्या 56 लाख के लगभग थी। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा एवं चर्च के नाम पर प्रायः प्रत्येक ग्राम में कम से कम एक देवालय तो पाया ही जाता है। इसी अनुपात में अवतारों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 80 भगवानों की सूची गत दिनों प्रकाशित हुई थी, यह बात और है कि उस में से पचास प्रतिशत हेराफेरी एवं तस्करी जैसे कार्यों में संलग्न पाये गये थे। 'गुरु' शब्द के अर्थ का जितना संकुचन तथा अवमूल्यन हुआ है, उतना शायद ही किसी अन्य शब्द का हुआ हो। गुरु का अर्थ आज सब से चालाक एवं जालसाज व्यक्ति से लिया जाता है। बातचीत में 'क्यों गुरु क्या हाल है' सामान्य उक्ति बन गयी है। 'गुरु ही गुरु' नामक फिल्म बन गई है। शिष्यों को अंधी भेड़ें समझकर अच्छी तरह मूँड़ने वाले तथा श्रद्धा का दोहन कर अनाप-शनाप सम्पत्ति बटोरने वाले गुरुओं, आचार्यों की भरमार आकस्मिक नहीं है।

ईमानदार कौन? वस्तुतः अपने आपको भगवान कहने वाला धूर्त है तथा जो धूर्त को भगवान मानता है, वह मूर्ख है। पाश्चात्य देशों में कुत्ते पालने वाले अपने घर के बाहर यह सूचनापट लगाते हैं कि 'कुत्तों से सावधान' (बी वेयर आफ डाग्स)। हमने अफ्रीका, यूरोप एवं अमरीका के भगवान-प्रेमियों के घरों के समक्ष एक और सूचना-पट लगाने की पहल की है,'भगवानों से सावधान' अर्थात् (बी वेयर आफ गाड्स), क्योंकि 'डाग्स' (कुत्ते) ईमानदार हैं, केवल अपरिचितों को ही काटते हैं, जबकि तथाकथित 'गाड्स' अपने परिचितों—शिष्यों की जेबें काटते हैं। 'गाड्स' का उल्टा डाग्स होता है। दोनों से सावधान रहने की चेतावनी दी गयी है : जैसे तान्त्रिक दृष्टि से भगवान से डरना बुरा नहीं है। यहाँ तो, भगवानों से डरने की बात पर जोर दिया गया है, क्योंकि भगवान तो एक है, अनेक नहीं।

धर्म का अर्थ गुण एवं कर्म है। किसी व्यक्ति एवं वस्तु की प्रकृति एवं स्वभाव का नाम धर्म है। चन्दन की प्रकृति अथवा स्वभाव सुगंध है, इसलिए चन्दन का धर्म सुगंध है। नमक का धर्म खारापन, शक्कर का मिठास तथा नीम का कड़वाहट है। जो गुण व्यक्ति एवं वस्तु में निहित है, उसमें घुलामिला है, मिश्रित है, अपरिवर्तन-शील है, सार्वभौम है, उसे ही सनातन कहते हैं। जो मानव के तन, मन एवं भोजन में समाहित है वही मानव का सनातन धर्म अथवा मानव-धर्म है।

आज भी पशुओं ने एवं वस्तुओं ने अपना गुण, स्वभाव अर्थात् धर्म नहीं छोड़ा, किन्तु मनुष्य ने अपना स्वभाव छोड़ दिया है। इसलिए दुखी हैं। वृक्षों ने फल देना, नदियों ने जल देना तथा गायों ने दूध देना नहीं छोड़ा, इसलिए वे अनुकरणीय हैं। इसी कारण पशु-पक्षी कम बीमार पड़ते हैं।

समग्र ब्रह्मांड का सृजक, पालक एवं संहारक एक ही परमात्मा है। वेदों में ऐसे 'एक सद् विप्रा-बहुधा वदन्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। उस स्वयंभू एक परब्रह्म द्वारा रचित अपौरुषेय धर्म दो नहीं हो सकते, इसलिए समस्त मानव-जाति के लिए एक ही मानव-धर्म हो सकता है, जिसे सनातन धर्म कहते हैं। पथ अनेक हैं, क्योंकि वे अनेक पुरुषों, महापुरुषों, तीर्थकरों, पैगम्बरों द्वारा प्रवर्तित है। इसलिए पंथ पौरुषेय कहलाते हैं। पुरुष की सीमा है, इसलिये उसके द्वारा प्रवर्तित पंथ सम्प्रदाय की सीमा में हैं, जबकि अपौरुषेय प्रभु असीम व अनन्त है। इसलिए धर्म अन्तहीन एवं असीम है। साथ ही ईश्वर निर्मित अर्थात् प्रकृतिप्रदत्त सम्पदा सबके लिए है, जबकि मानव-निर्मित एवं पुरुष-प्रदत्त सम्प्रदाय एवं पंथ एक समाज एवं एक वर्ग विशेष के लिए हैं। ईश्वरीय सम्पदा पर सबका अधिकार होता

है। भगवान के सभी पुत्र समान हैं, न कोई छोटा है और न कोई बड़ा है। धर्म मानव को जोड़ने के लिए है, तोड़ने के लिए नहीं, जबकि पंथ एवं सम्प्रदाय मानव को मानव से तोड़ रहे हैं, विभाजित कर रहे हैं, भेदभाव की दीवारें खड़ी कर रहे हैं। धर्म प्रेम पैदा करता है जबकि पंथ घृणा पैदा कर रहे हैं।

आजकल जगह-जगह धर्म के नाम पर झगड़े सुनाई देते हैं। वास्तव में झगड़ा धर्म का नहीं, पंथों का है। धर्म निस्स्वार्थ है और पंथ स्वार्थमय है। स्वार्थ ही इन्सान इन्सान को लड़ाता है। धर्म मुफ्त में बदनाम होता है। धर्म अखण्ड मानवता का प्रतीक है, जबकि पंथ मानव-समाज को खण्ड-खण्ड कर रहे हैं। 'जियो और जीने दो' की आचार-संहिता में ही सच्चा धर्म सन्निहित है, अतएव आर्ष वाङ्मय में 'आचारः प्ररमो धर्मः', आचरण को ही प्रथम धर्म कहा गया है।

जन्म से सभी मनुष्य सनातनी होते हैं, धार्मिक होते हैं। जन्म के बाद पंथ-विशेष के पंथी और ग्रंथ विशेष के ग्रन्थी बनते हैं। नवजात शिशु को देखकर उसे मानव ही कहा जा सकता है। जन्म से न कोई मुसलमान होता है, न हिन्दू होता है, न सिख होता है और न ही ईसाई होता है।

जन्म के समय बुद्ध, महावीर, क्राइस्ट, मुहम्मद, गुरुनानक सभी इन्सान थे, अर्थात् सनातनी थे। बुद्ध के बाद दुनिया को त्रिपिटक ग्रन्थ तथा बुद्ध-पंथ मिला, तीर्थकरों एवं महावीर के बाद धम्मपद तथा जैन-पंथ मिला। जीजस क्राइस्ट के बाद बाइबिल तथा ईसाइयत मिली, मुहम्मद साहब के बाद कुरान तथा इस्लाम मिला, गुरुनानक देव के बाद गुरुग्रन्थ साहब तथा सिख-पंथ मिला। इसलिए बुद्ध-मत से यदि बुद्ध को, जैन से 24 तीर्थकंरों को, ईसाइयत में क्राइस्ट को, पारसी से जुरदश्त को, सिख पंथ से दस गुरुओं को और यहूदी से मोजेज को अलग करें तो उक्त पंथों में कुछ नहीं बचेगा। जबकि सनातन धर्म से यदि श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा 24 अवतारों को भी निकाल दें, तब भी सनातन धर्म शेष रहेगा। श्रीराम एवं श्रीकृष्ण सनातन धर्म के संरक्षक तो थे, किन्तु प्रवर्तक नहीं। साधु-सन्तों एवं सज्जनों से धर्म जीवित रहता है और दुष्टों दानवों से धर्म को खतरा होता है, इसलिए अवतारों का आना साधु-सन्तों की रक्षा एवं दुर्जनों के विनाश के लिए माना गया है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' : यदि सनातन धर्म को हम 'पावरहाउस' कहें, तो पंथों को ट्रांसफार्मर कह सकते हैं। देशकाल और वातावरण के अनुरूप ही महापुरुषों ने पंथों को प्रारम्भ किया और मूल प्रकाश की धारा एक पावर हाउस रूपी सनातन धर्म से मिलती रही। सार्वभौम सनातन धर्म में श्रद्धा, भक्ति, विवेक, अहिंसा, करुणा, दया, सत्य, प्रेम, पवित्रता, सेवा, सद्भाव, भाईचारा, गुरुभक्ति का समावेश है। सनातन धर्म से बुद्ध ने करुणा ली, महावीर ने अहिंसा ली, क्राइस्ट ने सेवा-भावना ली, मुहम्मद साहब ने भाई-चारा लिया, मोजेज ने सत्यप्रेम लिया, जुरदश्त ने पवित्रता ली, दयानन्द ने विवेक लिया, गुरुनानक ने गुरुभक्ति ली। आज 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सनातन भाव को संस्थापनार्थ इन्हीं गुणों की आवश्यकता होती है। वस्तुतः 'साम्प्रदायिक-सद्भाव, लोक-कल्याण विश्वशान्ति, विश्व बन्धुत्व एवं मानव धर्म के लिए आज हमें बुद्ध एवं करुणा चाहिए, बुद्धवाद नहीं, हमें महावीर एवं अहिंसा चाहिए, जैनवाद नहीं, हमें क्राइस्ट व सेवा भावना चाहिए, ईसाईवाद नहीं, हमें मुहम्मद साहब और भाईचारा चाहिए, इस्लामाबाद नहीं, हमें जरदुश्त व पवित्रता चाहिए, पारसी पंथ नहीं, हमें मोजेज और यहूदी का सत्प्रेम चाहिए, यहूदीमत नही, गुरुनानक देव तथा गुरु-भक्ति चाहिए, सिख-पंथ नहीं क्योंकि वादों मतों पंथों एवं सम्प्रदायों के नाम पर मानवता एवं मानव-धर्म अर्थात् सनातन धर्म खण्ड खण्ड होकर बिखरता टूटता जा रहा है। विश्व को आज मानवता को विभाजित करने वाले नहीं, बल्कि समायोजित करने वाले, जोड़ने वाले सच्चे पीर चाहिएँ, जो पर दुःख-कातरता एवं संवेदना को अपना धर्म मानते हों। ऐसे आस्तिक चाहिएँ जो दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझते हों। सनातन धर्म जीभ के समान है तथा दांत पंथों के समान हैं। जीभ एक ही होती है और दाँत बतीस। जीभ मानव के जन्म के साथ आती है तथा आजीवन बनी रहती है। जब कि दाँत जन्म के बाद आते हैं तथा मृत्यु के पूर्व ही गिर जाते हैं। दाँत जब निकलते हैं, तब बच्चों को तकलीफ देते हैं। कठोरता के कारण दूध के दाँत बाल्यकाल में ही गिर जाते हैं तथा फिर निकलते है एवं वृद्धावस्था में गिरते समय पुनः कष्ट देते हैं, क्योंकि दाँत कठोर हैं, कट्टर हैं पंथों की तरह, जबकि जीभ नरम, लचीली एवं सहिष्णु है, धर्म के समान। धर्म कट्टरता का नहीं कोमलता का नाम है। धर्म राष्ट्रीय मार्ग के समान है और पंथ तथा सम्प्रदाय अनेक पगडंडियों के समान है जो समय -समय पर राष्ट्रीय मार्ग से बिछुड़ती एवं जुड़ती रहती हैं। ■

अग्ररत्न मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल की 105वीं वर्षगांठ पर स्मरणांजलि

10 जून 1900 को लाला प्रभुदयाल बंसल, जौनती (दिल्ली) के परिवार में जन्मे लक्ष्मीनारायण अग्रवाल समाज के प्रथम पंक्ति के उन नींव पत्थरों में से एक थे, जिनकी पावन अग्रोहा को अग्रवालों के पाँचवें तीर्थधाम के रूप में प्रतिष्ठान करने, अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल के प्रचार-प्रसार तथा संगठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इनके बाबा का नाम लाला चेतराम जी था। उन्होंने अपना जीवन एक शिक्षक के रूप में शुरू किया, इसी कारण वे 'मास्टरजी' के नाम से विख्यात हुए। आपका सम्पूर्ण जीवन अग्रोहा के निर्माण, विकास तथा अग्रवाल वैश्य समाज की सेवा एवं समुन्नति के लिए समर्पित रहा। आपने अग्रोहा निर्माण के स्वप्न को संजोया और सतत 50 वर्षों तक अग्रवाल समाज की सेवा-साधना में रत रह उसे नई गौरव-गरिमा प्रदान की।

आपने श्री जमनालाल बजाज द्वारा स्थापित अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा को 1948 में पुनर्जीवित कर उसके माध्यम से अग्रोहा में 1950, 1952, 1965 आदि में विशाल सम्मेलनों का आयोजन कराया, जिनमें श्री कमलनयन बजाज, लाला जुगल किशोर, श्री तख्तमल जैन, पंजाब के पूर्व मुख्य मंत्री श्री रामकिशन आदि पधारे और इन सम्मेलनों में अग्रोहा को पुनः बसाने, वहां महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग कालेज स्थापित करने, उस हेतु भूमि खरीदने, अग्रोहा में मण्डी की स्थापना आदि के निर्णय प्रमुख रूप से लिए गए। आप स्वयं अनेक वर्षों तक अग्रवाल महासभा के महामंत्री रहे और आपने इन निर्णयों को क्रियान्वित करने की दिशा में अनेक कदम उठाए।

1966 में आपके प्रयत्नों से महाराजा अग्रसेन टेक्नीकल सोसायटी के अन्तर्गत् तीन लाख गज (300 बीघा) जमीन इंजीनियरिंग कालेज हेतु अग्रोहा में क्रय की गई किन्तु किसी कारणवश इस योजना के सिरे न चढ़ने और 1976 में अग्रोहा-विकास-ट्रस्ट की स्थापना होने पर आपने इस भूमि में से 23 एकड़ भूमि ट्रस्ट को तथा 10 एकड़ भूमि महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल को प्रदान

किए जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो आपकी उच्च कोटि की सदस्यता की प्रतीक है। यह भूमि अग्रोहा के बिल्कुल समीप राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 10 पर स्थित है, जिस पर आधुनिक अग्रोहा का भव्य निर्माण हो रहा है। आपने अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के नाम से मारवाड़ी शब्द हटा कर तथा उसके द्वार सम्पूर्ण अग्रवालों के लिए खोल कर उसे व्यापक रूप देने में अत्यधिक योगदान दिया।

लगभग 50 वर्षों तक समाज-सेवा की ज्योति अविरत प्रज्वलित रखते हुए यह महानज्योति 3 दिसम्बर, 1983 को अनन्त में विलीन हो गई। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा वाराणसी अधिवेशन 23 जनवरी 1983 को ताम्रपत्र एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया गया।

समाज द्वारा मरणोपरान्त कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आठ-दस संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया और

अग्रोहा-विकास-ट्रस्ट द्वारा 24 अक्तूबर 1999 को सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार 1999 से मास्टर जी को सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनके सुपुत्र श्री चन्द्रमोहन गुप्ता ने ग्रहण किया। पुरस्कार के अन्तर्गत् शॉल, श्रीफल, प्रतीक-चिन्ह, प्रशस्तिपत्र तथा 51000/- की राशि दी जाती है।■

-डॉ. विष्णुचन्द गुप्ता, 1958, रानीबाग, दिल्ली-34

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित 'मनवाही सुख-समृद्धि प्राप्त करने के लिए अध्यात्म विज्ञान को' के कुछ अंश

हमारे देश में सार्वजनिक रूप में आध्यात्मिकता का लोप -सा हो गया है। यों कहने को तो छप्पन लाख पेशेवर ऋषि-महात्मा इस देश में रहते हैं और करीब-करीब उतने ही बिना पेशे वाले भगत और मिल सकते हैं, पर इनमें ऐसे लोग चिराग लेकर ढूँढने पड़ेंगे, जो योग का वास्तविक अर्थ समझते हों। आज गृहत्यागी, वस्त्रहीन और जटाधारी मायावियों को देखकर भी लोगों की अंतरात्मा यह स्वीकार नहीं करती कि वे लोग स्वयं कुछ उन्नति कर रहे हैं या इनके संसर्ग में आने वाला कोई दूसरा भी उन्नति कर सकता है।

आज आध्यात्मिक क्षेत्र में ऐसे कंगले पड़े हैं, जिनमें पौरुष, योग्यता, उपार्जन शक्ति, विवेक और बल का बिल्कुल अभाव है। वे अपने योग्यता-बल से कुछ भी कर सकने में असमर्थ होते हैं, यहाँ तक कि पेट भरने को भी मोहताज हैं। ये लोग जब अपने त्याग के गीत गाते हैं, तो हँसी रोके नहीं रुकती, क्योंकि इनमें आधे से अधिक लोग ऐसे हैं, जो जीवन में सफलता प्राप्त न कर सके, परिस्थितियों को इच्छानुकूल न बना सके, असमर्थ रहे, अपमानित हुए और नालायकी के कारण दुनिया से दुत्कारे गए। तब वे लोग हताश, उदास, दुःखी चिड़चिड़े होकर संसार को भवसागर मानकर अपने लिए एक काल्पनिक स्वर्ग की रचना करते हैं और उसमें बेपेंदी की उड़ानें उड़कर किसी प्रकार अपना मन बहलाते हैं। क्या ये लोग त्यागी हैं? क्या ये संन्यासी हैं? क्या ये अध्यात्मवादी हैं? यदि अयोग्यता और अकर्मण्यता की प्रतिक्रिया का नाम ही अध्यात्मवाद है, तो हर एक व्यक्ति को दूर से ही उसे नमस्कार करना चाहिए।

सत्य का सूर्य सदा के लिए अस्त नहीं हो सकता। उल्लू और चमगादड़ों को प्रसन्न करने वाली निशा का आखिर अंत होता ही है। अब वह युग निकट आ गया है, जब सच्चाई प्रकट होगी और उसके प्रकाश में सब लोग वास्तविकता का दर्शन कर सकेंगे। नवयुग की स्वर्णिम उषा कमल पुष्पों की तरह मुस्कराती हुई आती है। यदि ऐसे समय में सिंह की खाल ओढ़कर गधा अपने को सिंह साबित करे, तो इसमें सिंह की प्रतिष्ठा नहीं घटती, इसका दोष या तो धोखेबाज गधे पर है या भ्रम में पड़ जाने वाले भोले लोगों पर। लाख वर्ष तक लाख गधे सिंह की खाल ओढ़े फिरें, फिर भी सिंह की महानता उसके गौरव को कम न होने देगी। अध्यात्मवादी अपनी अनन्त अद्भुत शक्तियों के कारण असली सिंह है। उसकी महत्ता में रत्ती-भर भी अन्तर नहीं आता, भले ही लाखों ठग और मूर्ख उसका दुरुपयोग करके बदनाम करते रहें।

व्यापार में अधिक लाभ, नौकरी में अधिक सुविधा और तरक्की, पत्नीप्रेम, पुत्र-शिष्य और सेवकों का आज्ञापालन, मित्रों का भ्रातृभाव, गुरुजनों का आशीर्वाद, परिचितों में आदर, समाज में प्रतिष्ठा, निर्मल कीर्ति, अनेक हृदयों पर शासन, नीरोग शरीर, सुन्दर स्वास्थ्य, प्रसन्नचित्तता, हर घड़ी आनन्द, दुःख-शोकों से छुटकारा, विद्वता का सम्पादन, तीव्र- बुद्धि, शत्रुओं पर विजय, वशीकरण का जादू, अकाट्य नेतृत्वं, प्रभावशाली प्रतिभा, धन-धान्य, इंद्रियों के सुखदायक भोग, वैभव-ऐश्वर्य, ऐश-आराम, सुख-संतोष, परलोक में सद्गति ये सब बातें प्राप्त करने का सच्चा सीधा मार्ग अध्यात्मवाद है।

इस पथ पर चलकर जो सफलता प्राप्त होती है, वह अधिक दिन ठहरने वाली, अधिक आनन्द देने वाली और अधिक आसानी से प्राप्त होने वाली होती है। एक शब्द में यों कहा जा सकता है कि सभी इच्छा-आकांक्षाओं की पूर्ति का अद्वितीय साधन अध्यात्मवाद है। इस तत्त्व को जो जितनी अधिक मात्रा में जिस निमित्त संग्रह कर लेता है, वह उस विषय में उतना ही सफल हो जाता है। कायर और काहिल लोग अपने हर काम को कराने के लिए देवी-देवता, संत-महन्त, भाग्य, ईश्वर आदि की ओर ताकते हैं। ऐसे कर्महीनों के लिए उचित है कि किसी सनक में पड़े-पड़े झोंके खाया करें और ख्याली पुलाव पकाया करें।

स्मरण रखिए यह विद्या कुछ मंत्र याद कर लेने से, अमुक पुस्तक का पाठ करने, माला जपने, तिलक लगाने, आसन जमाने, साँस खींचने तक ही सीमित नहीं हैं। कर्मकाण्ड इस विद्या की प्राप्ति में कुछ हद तक सहायक हो सकते हैं; वे साधन हैं साध्य नहीं। कई व्यक्ति इन कर्मकाण्डों को ही अंतिम सीढ़ी समझ कर लगे रहते हैं और इच्छित वस्तु को नहीं पाते, तब वे उन पर से मन हटा लेते हैं। ■

जल-प्रदूषण मानव जीवन के लिए खतरा

—विनय कंसल (पर्यावरणविद्)
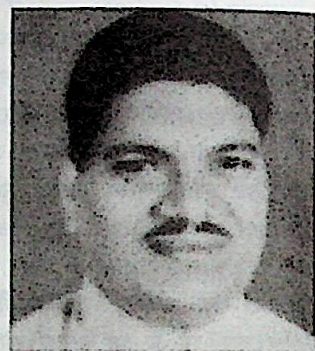
नई दिल्ली, 'पानी' प्रकृति द्वारा 'मानव-जीवन' के लिए प्रदान किया गया 'अतिमूल्यवान् उपहार' है, जिसके बिना 'धरती' पर 'जीवन की कल्पना' करना भी व्यर्थ है। यह एकमात्र ऐसा 'प्राकृतिक संसाधन' है, जिसके कारण पड़ोसियों में ही नहीं, बल्कि देशों के बीच भी समय-समय पर 'युद्ध' का 'शंखनाद' गूँजता रहता है। सचमुच 'जल है तो कल है, जीवन का हर पल है।' इसलिए यदि पानी पर किसी तरह का संकट आता है तो जीवन पर भी संकट आना स्वाभाविक है।

'जल' पीने के अलावा उद्योग-धंधों में, सिंचाई, ऊर्जा-उत्पादन एवं अन्न-उत्पादन के लिए अत्यावश्यक है। पेयजल हमें प्राकृतिक जल-स्रोतों से या भूमिगत जल से ही मिलता है। परन्तु आज औद्योगिक फैलाव, बढ़ती आबादी, वनों का अवैध कटाव, शहरीकरण आदि से उत्पन्न 'प्रदूषण' के बोझ से नदियों, तालाबों अथवा अन्य जल-स्रोतों में विसर्जित रसायनिक, धात्वीय अधात्वीय एवं अन्य जहरीले रसायनों के कारण जल की गुणवत्ता निरन्तर बिगड़ती ही जा रही है। यहाँ तक कि भूमिगत जल जो इस संदेह की सीमा से परे समझा जाता था, अब विश्वसनीय नहीं रह गया है। आज के युग में मानव 'पर्यावरण प्रदूषण' की सभी 'सीमाओं' को लाँघ चुका है। सामान्यतः 'प्राकृतिक जल' से किसी अवांछित बाह्य पदार्थ के प्रवेश के कारण 'जल की गुणवत्ता' में जो कमी आती है, वही 'जल प्रदूषण' कहलाता है।

प्राकृतिक स्रोतों से प्रदूषण इतनी मंद गति से होता है कि सामान्यतः इसके कोई गंभीर परिणाम एकदम सामने नहीं आते, लेकिन पिछले कुछ दशकों में 'औद्योगीकरण तथा शहरीकरण' की तीव्रता एवं अन्य मानवीय गतिविधियों के कारण 'जल-प्रदूषण' की समस्या ने गंभीर रूप धारण कर लिया है। 'जल-प्रदूषण' मानव के विभिन्न क्रियाकलापों, जैसे—जल में 'घरेलू बहिःस्राव, कृषि बहिःस्राव' आदि देश की '80 प्रतिशत नदियाँ प्रदूषण की चपेट' में हैं। ये नदियाँ सीवर और व्यवसायों से निष्कासित 'दूषित जल' का 'कूड़ादान' बनकर रह गयी हैं। रसायन, वस्त्र, कागज, दवाओं, पैट्रो रसायन, धात और उर्वरकों के कारखानों के कारण 'नदियों' में खतरनाक रसायन' जाकर घुल-मिल रहे हैं। बड़े उद्योगों से निकला अवशिष्ट बहिःस्राव भी जल को संदूषित करता है। 'शहरी आबादी' द्वारा 'मल-जल (सीवेज)' को भी बिना किसी उपचार के सीधे नदियों में बहा दिया जाता है। इसके कारण नदियाँ तथा अन्य जल-स्रोत बुरी तरह से प्रदूषित' हो रहे हैं।

नदियों के प्रदूषित होने से उनके किनारे स्थित कुओं आदि का भी पानी संदूषित हो जाता है।

'शुद्ध और स्वच्छ' समझे जाने वाले 'भूमिगत जल भंडारों' में भी अब 'रसायनिक विषाक्तता' बढ़ने लगी है। ऐसा अनुमान है कि 'दिल्ली' में निरन्तर बढ़ रहे 'जल-प्रदूषण' और उससे फैल रही बिमारियों—साँस, टी.बी, खाँसी, कफ, हिस्टीरिया, अस्थमा, गैस्ट्रोइन्टेस्टाइनल, त्वचा संबंधी और स्नायुतंत्रीय समस्याएँ, चर्म-रोग, हैजा, टायडफाइड, कैंसर जैसी 'भयावह बिमारियों' के कारण आज हर दूसरा व्यक्ति किसी-न-किसी बीमारी से ग्रस्त है। ऐसा कहना है पिछले '17 वर्षों' से 'पर्यावरण जागृति, शिक्षा एवं संरक्षण (सुरक्षा) के क्षेत्र में 'निःस्वार्थ सेवारत' प्रमुख समाज-सेवक, 'डी.डी.ए. पार्क निरीक्षक कमेटी', उत्तरी दिल्ली के अध्यक्ष व पर्यावरणविद् श्री विनय कंसल का।

अतः बढ़ते 'जल-प्रदूषण' की भयावह स्थिति को देखते हुए हमें इस दिशा में विशेष कार्यक्रमों तथा योजनाओं को क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। मसलन, देश-भर में 'छोटे-छोटे बाँध, बाढ़ के लिए गहरे जलाशय, कूड़ा करकट तथा औद्योगिक अवशिष्ट पदार्थ एकत्र करने के विशाल जलाशय, आधुनिक सीवेज प्रणाली व सीवेज-शोधन, जल निकासी की नदियाँ, केन्द्र बायोगैस संयत्र, सामूहिक शौचालय, वन-वृक्ष-उद्यान तथा प्राकृतिक वनस्पतियों का विस्तार आदि। 'जल-प्रदूषण' को रोकने के लिए हमारी 'केन्द्र तथा राज्य सरकारों' द्वारा 'जल-प्रदूषण-निवारण' के लिए बनाए गए 'कानूनों' का 'सख्ती से पालन' होना

चाहिए तथा आम जनता में प्रदूषण एवं उससे होने वाले 'दुष्परिणामों' के प्रति जागरूकता पैदा करना आवश्यक है। इसके अलावा सबसे महत्त्वपूर्ण है— 'प्रकृति' की ओर पुनर्वापसी, जिसके द्वारा 'प्रकृति के संतुलन' को स्थापित कर सकते हैं तथा 'जल-संरक्षण, जल-प्रदूषण एवं जल-संकट' की समस्याएँ हल कर सकते हैं।

आज हमें 'जल-प्रदूषण' से 'सुरक्षा' के लिए और अधिक 'जागरूक और शिक्षित' होने की आवश्यकता है। इसी में 'राष्ट्र और हम सब की भलाई' है अन्यथा एक दिन इसकी 'भारी कीमत' हमारी 'वर्तमान एवं भावी पीढ़ी' को चुकानी पड़ेगी। ■

स्वतंत्रता सेनानी अग्रवाल को भावभीनी श्रद्धांजलि

उदयपुर दिनांक 6 फरवरी। स्वाधीनता सेनानी स्व. हरिप्रसाद अग्रवाल की द्वितीय पुण्यतिथि पर विविध कार्यक्रमों के साथ उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि दी गई। अग्रवाल के निवास पर पुत्र माणकचन्द अग्रवाल, महेशदत्त गर्ग, पुत्रवधू सुमित्रा अग्रवाल, मधु गर्ग, पौत्र विकास एवं मयंक गर्ग ने सर्वप्रथम दीप प्रज्वलित कर पूजा-अर्चना की। वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी व 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के अजमेर जेल के साथी श्री कनक मधुकर व अन्य परिजनों ने अग्रवाल के चित्र पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन के बाद असहाय व गरीबों को भोजन भी कराया गया। ■

भूल सुधार

मंगल-मिलन के जून 2001 के अंक में वर्ष 29 के स्थान पर गलती से 28 छप गया और यह गलती निरन्तर चलती रही।

दरअसल मंगल-मिलन को प्रकाशित होते हुए मार्च 2005 में 32 वर्ष पूरे हो चुके हैं। अप्रैल 2005 में 33वाँ वर्ष आरम्भ हो गया है।

अतः इस जून 2005 के अंक में हम इस गलती का सुधार कर रहे हैं। ■

कु. लक्ष्मी अग्रवाल को अमरीका से स्कोलरशिप

कु. लक्ष्मी अग्रवाल सुपुत्री श्री लाल साहब एवं श्रीमती रुक्मिणी अग्रवाल जूनागढ़ (उड़ीसा) ने जुपिटर साइंस कॉलेज भुवनेश्वर से H.S.C. परीक्षा 91.3 प्रतिशत अंकों से पास की। इस पर उन्हें Foundation for Excellence U.S.A. से स्कोलरशिप प्राप्त हुआ है।

कालाहण्डी साहित्य-विकास-परिषद की ओर से उनके वार्षिक उत्सव पर Foundation for Excellence एक मई 2005 को भागीरथी होटल, भवानी-पटना में 5000/-रुपये का चैक तथा प्रमाण-पत्र दिया गया। ■

डीयर पार्क सत्संग का 26वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

डीयर पार्क सत्संग हौज खास, नई दिल्ली के 26वें वार्षिकोत्सव पर उपस्थित भक्तजनों को सम्बोधित करते हुए पावनधाम हरिद्वार तथा गीता-भवन, मोगा (पंजाब) के संस्थापक स्वामी वेदान्तानंद जी महाराज ने बताया कि हमेशा प्रसन्नचित रहना चाहिए और अपना मूड (चित्तवृत्ति) कभी भी ऑफ नहीं करना चाहिए। कभी भी अभिमान नहीं करें, कर्त्तव्य करें, फल की इच्छा मत करें। अपने मन को सांसारिक वासनाओं से हटाकर प्रभु में लगाएँ। कभी क्रोध नहीं करें, मन को सुन्दर बनाएँ।

मुख्य अतिथि श्रीमती सुषमा स्वराज भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार ने कहा कि "इस सत्संग से उन्हें काफी वर्षों से लगाव है और वे भक्त के रूप में यहाँ आती हैं। उन्होंने आगे बताया कि इस सत्संग की एक विशेषता है कि यहाँ बड़े से बड़े सन्त एवं महात्मा इस छोटी सी व्यास पीठ पर आकर विराजमान हो जाते हैं। आज के युग में लाखों रुपया व्यास पीठ व पंडाल बनाने पर खर्च किया जाता है, लेकिन इस सत्संग में ऐसा नहीं है, यह एक सिद्ध स्थल बन चुका है और इसकी सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक पहचान बन गई है।" उन्होंने श्री जे.आर. गुप्ता, सत्संग संयोजक द्वारा इस सत्संग को उच्च शिखर पर पहुँचाने में विशेष योगदान की एवं निःस्वार्थ सेवा की सराहना की। श्री जे.आर. गुप्ता द्वारा सत्संग स्थल को बढ़ाने की प्रार्थना पर उन्होंने कहा कि 'अगले वर्ष तक यह काम हो जायेगा।' इस घोषणा का सभी भक्तजनों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

विशिष्ठ अतिथि श्री विजय कुमार मल्होत्रा, सांसद सदस्य ने कहा कि वे इस सत्संग से काफी प्रभावित हैं और अनेक बार आ चुके हैं। आज भी अपनी पत्नी के साथ आया हूँ। उन्होंने सत्संग-स्थल को बढ़ाने के निवेदन पर कहा कि श्रीमती सुषमा जी इस विषय पर बातचीत करके, हल जल्दी निकालेंगी।

दिल्ली के मेयर श्री सतबीर सिंह ने कहा कि वे यहाँ पर पहली बार आये हैं और उन्हें बहुत अच्छा लगा और जाना कि यहाँ पर नित्य प्रतिदिन पिछले 26 वर्षों से निरन्तर सत्संग हो रहा है। श्री जे.आर. गुप्ता, सत्संग-संयोजक ने सभी अतिथियों को सत्संग-स्मृति-चिह्न प्रदान किये और दूर-दूर से पधारे विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के गण्यमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया, जिसमें लाला रामेश्वरदास गुप्त, श्री प्रदीप मित्तल, श्री मोहनलाल चोपड़ा, आरती मेहरा आदि के नाम प्रमुख हैं।

इस अवसर पर श्रीमती सुषमा स्वराज ने श्री कृष्ण जी के एक भजन पर नाचकर सभी श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया तथा सभी ने करतल ध्वनि से उनका अभिनन्दन किया।

सुरभि अग्रवाल स्वर्ण पदक से सम्मानित

कोहिनूर प्रदान करने वाले देश का एक और चमकता हीरा है सुरभि अग्रवाल, सुपुत्री श्री आदर्श अग्रवाल एवं श्रीमती कुसुम अग्रवाल। इन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय ने 5 मार्च 2005 को स्वर्ण-पदक से विभूषित किया। 22 वर्षीय सुरभि ने वर्ष 2004 में दिल्ली कालेज इंजीनियरिंग से इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की शिक्षा पूर्ण की है। क्षेत्र में 85% अंक प्राप्त करके दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रथम स्थान पाया है। साथ ही चार वर्ष की इस पढ़ाई में चारों वर्षों तक सदैव प्रथम रहने के कारण इन्हें सर्वश्रेष्ठ छात्रा का पुरस्कार प्रदान किया गया है और इस पुरस्कार में स्वर्ण-पदक के साथ-साथ उन्हें सरकार की तरफ से पूर्ण शिक्षा की फीस भी वजीफे के रूप में देने की घोषणा की गई थी परन्तु उन्होंने फीस को कालेज के उत्थान के लिए दान दे दिया है।

कालेज ने उनके 8वें सत्र में किए गए प्रोजेक्ट को सर्वश्रेष्ठ पाया और उसके लिए भी एक स्वर्ण-पदक कालेज की उपाधिवितरण (Convocation) के अवसर पर दिया जाएगा। उनके प्रोजेक्ट और प्रैक्टिकल की पुस्तिकाएँ अध्यापकों ने अपने पास रखी हैं और आने वाले छात्र-छात्राओं को दिखाते हैं कि कार्य ऐसा करना चाहिए। HOD (Head of Department) डॉ. प्रमोद कुमार का कहना है ऐसी छात्रा या छात्र तो उनके कार्यकाल में कोई और आया ही नहीं। सुरभि सब में intelligent और साथ ही मेहनती और dedicated भी है।

सुरभि बहुमुखी प्रतिभा का व्यक्तित्व रखती है। बोर्ड की 10वीं परीक्षा में भी प्रथम आने तथा 11वीं, 12वीं में A.P.J. स्कूल की परीक्षाओं में प्रथम रहने पर उन्हें दो वर्ष तक A.P.J. School से Scholarship मिलता रहा। 12वीं में 90.2% अंक प्राप्त करके प्रथम रही और Compettion पास करके बहुत से इंजीनियरिंग कॉलेजों के दाखिले के लिए eligible हुई परन्तु DEC को Join किया।

समय-समय पर पेंटिंग, नृत्य, गाने और फूलों की सजावट (Ikebana) के लिए पुरस्कार प्राप्त करती रही हैं। कम्प्यूटर के इंटर कॉलेजों में प्रमाण-पत्र और इनाम जीते हैं।

उच्च शिक्षा के लिए जर्मनी के दो उच्चतम कालेजों में communication की mastees के लिए उनका चयन हुआ जिसके लिए जर्मन-सरकार पूर्ण पढ़ाई की फीस स्वयं देकर आने-जाने और रहने, खाने के लिए स्कोलरशिप दे रही थी। यह स्कोलरशिप पूर्ण एशिया में सिर्फ चार छात्रों को दिया जाता है, परन्तु उन्होंने अपने देश में ही रहकर कार्य करने का निर्णय लिया। वे इस समय बैंगलोर में स्थित एक MNC (Magma Design Automation Pvt. Ltd.) में सहायक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने जुलाई 2004 में ही संस्था को Join किया है और इतने कम समय में ही अपनी कार्य प्रतिभा, हँसमुख स्वभाव, Communication skill, Group working and dedication से वहाँ भी अपनी एक पहचान बना ली है। सुरभि ने अपनी मेहनत और लगन से जो स्थान पाया, उसने न केवल अपने माता-पिता का सिर ऊँचा किया, वरन् अपने पूरे अग्रवाल-समाज को गौरव प्रदान किया है। हमारी शुभकामनाएँ हैं कि उन्हें और आशीर्वाद भी मिले कि वे पूरे विश्व में अग्रवाल-समाज का नाम रोशन कर सकें। ■

पुस्तंक समीक्षा

पुस्तक का नामः कर्मयोगी बलराज प्रेमी
रचयिताः श्रीमती संतोष गुप्ता
6/625 सुंदर विहार,
नई दिल्ली
फोन नं. :25281979

यह पुस्तक पुराने समाजसेवी श्री बलराज प्रेमी के जीवन पर आधारित है। इसमें प्रेमी जी के पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक क्रियाकलापों को बहुत अच्छे, सुंदर और विद्ववत्तापूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक की सबसे बड़ी खूबी मुझे यह नज़र आई कि इसे श्री बलराज प्रेमी की पुत्रवधू ने लिखा है।

आजकल आए दिन अखबारों की सुर्खियों में पढ़ने को मिलता है कि वृद्धों और परिवार के सदस्यों में अनबन के कारण वृद्ध-आश्रमों में भेजा जा रहा है। इस प्रकार वृद्ध-आश्रमों की मांग बहुत बढ़ रही है। दूसरी ओर श्री बलराज प्रेमी की पुत्रवधू ने उनका जीवन चरित्र उनके जीते-जी लिखा है। ऐसी अवस्था में लिखा है जबकि वे अस्वस्थ हैं। इस पुस्तक में उनकी खूबियों, विशेषताओं को तो उजागर किया ही है साथ ही उन्हें एक मसीहा के रूप में प्रस्तुत भी किया है। यह श्री बलराज प्रेमी और उनके परिवार की एक मिसाल है। इस प्रकार श्रीमती संतोष गुप्ता ने आजकल की युवा पीढ़ी को चपत लगाने के साथ-साथ उसका मार्ग-दर्शन भी किया है। पुस्तक लिखने के लिए श्रीमती संतोष की मैं सराहना करता हूँ, प्रशंसा करता हूँ।

श्री बाबूराम गुप्ता, श्री बलराज प्रेमी

श्री बलराज प्रेमी को मैं पिछले 50 वर्षों से जानता हूँ। आरम्भ में जब वे करौल बाग में रहते थे तो श्री बाबूराम गुप्ता जी और श्री बलराजप्रेमी समाज-सेवा में निरन्तर लगे रहते थे और घर-घर जाकर लोगों को समाज-सेवा के लिए प्रेरित करते थे।

श्री बलराज प्रेमी एक निष्काम, निःस्वार्थ और समर्पित समाजसेवी रहे हैं। इस पुस्तक को पढ़ने से जहाँ पुराने लोगों को प्रसन्नता और आनन्द की अनुभूति होगी वहीं नई पीढ़ी को रास्ता तलाश करने में सुविधा भी होगी।पुस्तक पठनीय तो है ही साथ ही संग्रहणीय भी है। ■

-रामेश्वरदास गुप्त

राधेश्याम झुंझुनूवाला "अग्रश्री" से सम्मानित

महाराष्ट्र राज्य अग्रवाल सम्मेलन का प्रांतीय अधिवेशन 16 अप्रैल को जालना में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुंबई के श्री राधेश्याम झुंझुनवाला को "अग्रश्री" उपाधि से सम्मानित किया गया।

श्री राधेश्याम झुंझुनूवाला का जन्म 11 मार्च 1935 बुलढाणा जिले के खामगाँव में हुआ। व्यवसाय हेतु आप महानगरी मुंबई में जा बसे।

महाराष्ट्र शासन द्वारा आप विशेष कार्यकारी दंडाधिकारी पद पर भी नियुक्त रहे हैं। आज भी आपकी सामाजिक सक्रियता युवा नवजवान जैसी है। आप समाज प्रबोधन का कार्य निःस्वार्थ भाव से भगवान राम की पूजा के समान करते हैं। आप समाजसेवा हेतु समर्पित सच्चे समाजसेवी हैं। आप सभी के बीच 'भाया' के नाम से परिचित हैं। ■

पुस्तक समीक्षा
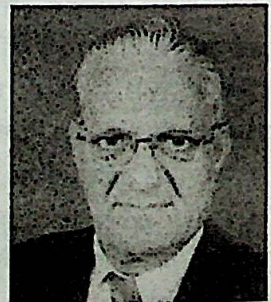
पुस्तक का नामः हेल्थ गाईड ऑफ इंडिया
लेखिकाः श्रीमती पद्मा बिनानी
प्रकाशकः बिनानी ट्रस्ट, रत्नम अपार्टमैंट, 4 लिटिल गिब्स रोड, मलाबार हिल, मुंबई-400006 (महाराष्ट्र)
मूल्यः तीस रुपये मात्र
पृष्ठ संख्याः 80

सुप्रसिद्ध लेखिका पद्मा बिनानी द्वारा रचित 'हेल्थ गाईड ऑफ इंडिया' पुस्तक वर्तमान पीढ़ी के लिए सुसंस्कारित व सुस्वास्थ्य हेतु संजीवनी के समान हैं। हमारी संस्कृति की महत्ता और शतायू जीने के तरीकों को इतने सुगम तरीके से लेखिका ने स्पष्ट किया है कि एक साधारण बालक भी इस पुस्तक के माध्यम से अपने जीवन के लक्ष्य को सहज प्राप्त कर सकता है। पुस्तक का भव्य मुख्य पृष्ठ और चित्र संयोजन पाठक का मन आकर्षित करने में पूर्ण सक्षम है। लेखिका ने 'अपनी बात' में पुस्तक के उद्देश्य को वेदोक्त वाणी से शतायु होने को पूर्ण माना है जो अंतिम पृष्ठ तक प्रमाणित है। तत्पश्चात् स्वस्थ और अस्वस्थ व्यक्ति में अनुभवी तरीकों से तुलनात्मक अध्ययन किया है।

लेखिका ने लोकप्रिय बाल पात्र छोटू और मोटू के माध्यम से सरल संवाद शैली को अपनाकर उन्हीं के अनुरूप प्राचीन कथाओं, बोध कथाओं का समावेश कर पुस्तक में रोचकता उत्पन्न की है। चित्रों के प्रति बालकों का विशेष आकर्षण होता है इस बात को स्वीकार करते हुए आवश्यकता अनुरूप चित्रों का समावेश भी इस पुस्तक की अलग पहचान है।

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लेखिका ने इसमें विषय के अध्याय या पाठ का शीर्षक अंग्रेजी वर्णमाला का उपयोग ए से जैड तक सार्थक वाक्यों के साथ किया है। प्रत्येक आलेख के अंत में छात्र-छात्राओं का बुद्धि कौशल नापने के लिए उसी के अनुरूप प्रश्नों का चयन किया गया है। संक्षेप में इतना कहा जा सकता है कि माता-पिता यदि अपने लाडलों का स्वांगीण विकास करना चाहते हैं तो यह पुस्तक उनके लिए राम बाण का कार्य करेगी। विद्यालयों एवं पुस्तकालयों के लिए पुस्तक संग्रहणीय है।

समीक्षकः पवन कुमार जोशी "पावक"
प्रशासक रीसेन्ट उ.प्रा. संस्कृत विद्यालय,
लक्ष्मी नगर, मदनगंज-किशनगढ़ (राज)-305801

श्रीहरि सत्संग समिति आगरा

अयोध्या-वृन्दावन में कथाकारों के प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था की देखभाल सन् 2005 से श्रीहरि सत्संग समिति आगरा करेगी। आगरा समिति को दोनों केंद्रों का अनुदान केंद्र बनाया गया। इस कार्य को सफलता हेतु एक समिति का आगरा में गठन किया गया है, जिसके संयोजक श्री पुरूषोत्तम जी अग्रवाल तथा अन्य सदस्य निम्न प्रकार हैं स्थानीय बंधुओं की पूर्ण दैनंदिन देखभाल हेतु वृंदावन में एक व्यवस्था समिति का गठन किया गया है। इस संबंध में गत् सप्ताह एक सभा का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री स्वरूपचंद गोयल ने गठित समिति की घोषणा की। ■

मुंबई के भाईंदर में सभा सम्पन्न

श्रीहरि सत्संग समिति मुंबई के द्वारा भाईंदर में 15 मई, रविवार को प्रमुख नागरिकों की एक सभा श्री रोहित दास पाटिल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सभा में भाईंदर के प्रमुख नागरिकों की उपस्थिति में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री स्वरूपचंद गोयल ने श्रीहरि सत्संग समिति द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस वर्ष महानगर में कई स्थानों पर कथाओं का आयोजन किया जा रहा है। उसमें भाईंदर भी एक स्थान है।

सभी उपस्थित बंधुओं ने उत्साहपूर्वक इसका समर्थन किया तथा वनवासी कार्य के लिए कथा को सफल बनाने हेतु एक उपसमिति का गठन किया। पाँच जनों की अध्यक्षता में यह भाईंदर की आयोजन समिति बनाई गई, जो निम्न प्रकार हैः- (1) श्री रोहितदास पाटिल (2) श्री संजय गर्ग (3) श्री महावीर शर्मा (4) श्री शिवनारायण अग्रवाल, (5) श्री शिवप्रकाश भूदेकाजी जो शीघ्र आगामी अन्य सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं से संपर्क करगें और बड़ी सभा का आयोजन किया जाएगा। महिलाओं की एक सभा शीघ्र करने का निर्णय लिया गया। सभा में दिसंबर-जनवरी में कथा करने का निर्णय लिया गया है। ■

नोएडा में रोड का नाम 'महाराजा अग्रसेन मार्ग'

दिनांक 28.4.2005 को समारोह के मुख्य अतिथि, नोएडा प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री देवदत्त के करकमलों द्वारा महाराजा अग्रसेन भवन के निकट, महाराजा अग्रसेन मार्ग एवं महाराजा अग्रसेन चौक का लोकापर्ण किया गया। अब प्राधिकरण के मानचित्र में फिल्म सिटी, अट्टा, जिला अस्पताल एनटीपीसी क्रासिंग से फलैक्स तक जाने वाली मास्टर प्लान रोड नं. 2 को महाराजा अग्रसेन मार्ग के नाम से जाना जाएगा।

लोकार्पण समारोह में अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने कहा कि इस सड़क के अनुरक्षण, वृक्षारोपण और सौन्दर्यकरण की जिम्मेदारी ओमेक्स ग्रुप ने उठाई।

ओमेक्स कन्स्ट्रक्शन के सुनील गोयल ने कहा कि प्राधिकरण से इसका डिजाइन स्वीकृत कराके शीघ्र ही काम शुरू किया जाएगा। इसमें महाराजा अग्रसेन की विशाल प्रतिमा भी स्थापित की जाएगी। सभा में उपस्थित प्रिया गोल्ड बिस्कुट के चेयरमैन बी.पी. अग्रवाल, ओमेक्स कन्स्ट्रक्शन लि. के सुनील गोयल, कैलाश अस्पताल के चेयनमैन डा. महेश शर्मा, जी. एन.आई.टी. के चेयनमैन के.एल. गुप्ता, अग्रवाल मित्र-मण्डल के अध्यक्ष ओ.पी. गुप्ता महासचिव मोहन लाल गुप्ता, लाला गुलाब चंद मित्तल, खेराती लाल सिंघल, राज कुमार गर्ग, सुधीर मित्तल, सुशील अग्रवाल, बी.डी. सिंघल, नोएडा प्राधिकरण के आर.के. शर्मा, प्राधिकरण के मुख्य अनुरक्षण अभियन्ता पी.एच. सिद्दीकी, परियोजना अभियन्ता श्योदान सिंह, एम.सी. त्यागी, रघुनन्दन सिंह यादव समेत अग्रवाल समाज के काफी गण्यमान्य लोग उपस्थित थे।

संस्था महासचिव, मोहन लाल गुप्ता ने कहा कि 6 फरवरी 2005 को महाराजा अग्रसेन भवन के उद्घाटन समारोह के अवसर पर जब मैंने इस मार्ग का नाम महाराजा अग्रसेन मार्ग रखने की अपील नोएडा अध्यक्ष के सामने रखी तब ही उन्होंने बहुत प्रसन्न होकर यह प्रस्ताव स्वीकार करने के साथ-साथ महाराजा अग्रसेन चौक के सौन्दर्यकरण की जिम्मेदारी भी ओमेक्स कन्स्ट्रक्शन के जिम्मे स्वयं ही लगा दी थी। जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया था। नोएडा अध्यक्ष द्वारा किया गया यह कार्य प्रशंसनीय है जिसे अग्रवाल समाज कभी नहीं भुला सकता। अंत में सभी उपस्थित गण्यमान्य का धन्यवाद किया गया।

आगामी परिचय-सम्मेलन

अग्रवाल निदेशिका समिति की ओर से आगामी परिचय-सम्मेलन रविवार 4 सितम्बर 2005 को धर्मभवन, नई दिल्ली में होगा।

श्रीमती कमला बहन ने एक और कन्या का विवाह कराया

महिला-दक्षता-समिति की ओर से पिलखुवा में निर्धन कन्या का विवाह कराए जाने की चारों ओर प्रशंसा की जा रही है। जानी-मानी महिला-समाज सेवी श्रीमती कमला बहन को उनके इस अनूठे सेवाकार्य के लिए बधाई-सन्देश मिल रहे हैं।

श्रीमती कमला बहन ने छीपीवाड़ा स्थित कमला-भवन 'मंदिर' के प्रांगण में नगर के वैश्य-समाज के एक अपंग व्यक्ति विजय की पुत्री पिंकी गुप्ता का विवाह अनवरपुर निवासी युवक सुनील गुप्ता के साथ एक सादे समारोह में कराकर आदर्श उपस्थित किया।

महिला-दक्षता-समिति की जिला-मंत्री निर्मला शर्मा स्वयं इस समारोह में उपस्थित थीं। विवाह में भोजन तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं, आभूषण, पलंग, वस्त्रों, बरतनों आदि की व्यवस्था कमला बहन तथा उनकी सहयोगियों की ओर से की गई थी। जब वर-वधू प्रणय-सूत्र में बंधे तो उनके सम्बन्धी गणों के चेहरों पर महिला-दक्षता-समिति के प्रति कृतज्ञता के भाव परिलक्षित हो उठे।

कमला बहन नगर की अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं से कई दशकों से जुड़ी रही हैं। नगर के अत्यन्त समृद्ध व्यापारी परिवार की कमला बहन ने श्रीकृष्ण-भक्ति-साधना से जुड़कर धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश किया था। ब्रज-क्षेत्र की सामूहिक यात्राओं के माध्यम से वे नगर की महिलाओं में भक्ति-भावना जागृत करने में सफल रहीं। जब वे अपनी भक्त-मंडली के साथ नगर में प्रतिवर्ष संकीर्तन महायात्रा में तन्मय होकर श्रीकृष्ण-प्रेम में नृत्य करती थीं तो दर्शक भाव-विभोर हो उठते थे।

कमला जी को वृन्दावन में एक संत ने प्रेरणा दी थी कि वे दुर्गास्वरूपा निर्धन कन्याओं का विवाह सम्पन्न कराने जैसे महान पुनीत कार्य का शुभारम्भ करें और उन्हें भगवान श्रीकृष्ण की सहज ही में अनुकम्पा प्राप्त होगी। कमला जी ने सेवा-परोपकार के कार्यों का भक्ति के एक विशिष्ठ अंग के रूप में स्वीकारा। वे अब तक आधा दर्जन निर्धन कन्याओं का विवाह करा चुकी हैं।

नगर की अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने कमला जी को निर्धन कन्या का विवाह कराने के लिए बधाई दी है। आचार्य रामनाथ सुमन-राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नगर संघचालक आनन्द प्रकाश सिंघल, वरिष्ठ पत्रकार शिवकुमार गोयल, भा.ज.पा. के प्रदेश मंत्री अशोक गोयल, शिवकुमार मित्तल, मुकुटलाल गर्ग आदि ने भी उन्हें बधाई दी है। ■

-पृष्ठ 24 का शेष

था। जालना अग्रवाल-समाज ने ठहरने के लिए एक बहुत उत्तम होटल में व्यवस्था की थी। लेकिन वह होटल भी जल-संकट का सामना कर रहा था, अर्थात् पैसा खर्च करने के बावजूद उस होटल के लिए पानी दुर्लभ वस्तुओं की श्रेणी में था। सरकार के अनेक विज्ञापन आते हैं, जिनमें जलसंचय की बात कही जाती है। लेकिन उन विज्ञापनों की ओर हम केवल एक दृष्टि भर डाल लेते हैं और इस पीड़ा को अपने मानस में नहीं बिठाते हैं। जिन्होंने महाराजा अग्रसेन या अग्रोहा का इतिहास पढ़ा है, कि वे अग्रोहा के विकास में भी पानी की भूमिका सबसे अधिक रही है। अग्रोदक का अर्थ है:- अग्रसेन का तालाब। निश्चित रूप से महाराजा अग्रसेन के जमाने में भी जल-संकट रहा होगा और इसीलिए उन्होंने अग्रोहा के निर्माण में जल-संचय को प्राथमिकता दी।

हम इस बात पर गर्व करते हैं कि हमारे पूर्वजों ने पीने का पानी सुलभ कराने के काम को प्राथमिकता दी। लेकिन हम आज क्या कर रहे हैं? हम ऐसा कोई कार्य न करें, जिससे जल नष्ट होता है। हम अपने आवास के निर्माण में यह व्यवस्था अवश्य रखें कि पानी का आवश्यकतानुसार उपयोग हो व निर्माण में यह व्यवस्था रखें कि जल खर्च कम से कम हो और वर्षा के जल का संचय हो। हमारे द्वारा आयोजित भोज-समारोह में हम जल को अमूल्य मानें और कम से कम जल बर्बाद हो, इस बात का ध्यान रखें। ■

महाराष्ट्र राज्य अग्रवाल-सम्मेलन की आमसभा जालना में सम्पन्न

जालना 20 अप्रैल 2005 महाराष्ट्र राज्य अग्रवाल-सम्मेलन की आमसभा प्रन्तीय अध्यक्ष श्री विजयकुमार चौधरी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय हिन्दी विद्यालय प्रागंण, जहाँ सोलहवाँ प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ, वही पर दिनांक 16 अप्रैल 2005 को सम्पन्न हुई। मंच पर उपाध्यक्ष श्री रमाकांत खेतान एवं मोतीराम अग्रवाल, महामंत्री श्रीरंग अग्रवाल, मंत्री गोपाल अग्रवाल एवं कोषाध्यक्ष श्री भिकारीलाल अग्रवाल उपस्थित थे। महामंत्री श्रीरंग अग्रवाल ने गत आमसभा की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई। कोषाध्यक्ष श्री भिकारीलाल अग्रवाल इन्होंने 2005-2006 का बजट एवं दिनांक 31 मार्च 2005 तक का आय-व्यय ब्योरा प्रस्तुत किया। उपस्थित भाइयों ने ऑडीटेड अकाऊंट इतने जल्दी प्रस्तुत करने पर उन्हें बधाई दी। अखिल भारतीय अग्रवाल-सम्मेलन के मुख्य संरक्षक श्री बनारसीदास गुप्ता, सांसद श्री पवन बंसल, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री विजय गोयल, सम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अर्जुन कुमार, युवा अग्रवाल के सम्पादक श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, विधायक श्री गोपाल अग्रवाल एवं श्री गोपीकिशन बाजोरिया आदि उपस्थित थे। आय-व्यय-ब्योरा एवं बजट को सर्वसमिति से पारित किया गया। महाराजा अग्रसेन चैरिटेबल ट्रस्ट के कार्यों को जल्द से जल्द क्रियान्वित किया जाए ऐसा सभी ने कहा। इसकी जिम्मेदारी गोपाल अग्रवाल बोदवड वालों को दी गई। श्री बद्रीनारायण जी बरवाले ने जालना में दूसरा अग्रसेन भवन बनाने के लिए एक करोड़ से भी अधिक लागत की जमीन लेकर उसकी रजिस्ट्री सम्पन्न करवाई, इसकी सभी ने सराहना की। श्री मोतीराम अग्रवाल जालना एवं श्री ॲड. विजय गोपाल अग्रवाल लातूर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महिला संगठन की प्रान्तीय अध्यक्षा सौ. मीना मनोहर अग्रवाल ने, युवा-संघठना के अध्यक्ष श्री किरण अग्रवाल ने भी अपने विचार रखे। महिला संगठन के खर्चे को स्वीकृति दी गई।

इस आमसभा की बहुत ही सुन्दर व्यवस्था अग्रवाल-समाज जालना द्वारा की गई थी। सम्मेलन की ओर से मंत्री श्री गोपाल अग्रवाल ने जालना अग्रवाल-समाज का धन्यवाद ज्ञापन किया। बैठक के पश्चात् भोजन की बहुत ही सुन्दर व्यवस्था आयोजक-समिति द्वारा की गई थी। सम्मेलन के सौलहवें प्रान्तीय अधिवेशन को युवा-अग्रवाल ने सुचारु रूप से प्रसिद्धि दी। उनका भी धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

कोटा व जयपुर में सर-गंगाराम की जयंती मनाई गई

कोटा 13 अप्रैल। हरित क्रान्ति के प्रणेता सर गंगाराम की जयन्ती अग्रवाल-सेवा-योजना राजस्थान के तत्वावधान में संस्था कार्यालय में प्रदेश-अध्यक्ष राजमल टाटीवाला की अध्यक्षता में मनाई गई।

श्री टाटीवाला ने गंगाराम के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित किया।

श्री कन्हैयालाल मित्तल ने अपने विचार व्यक्त किए। सचिव श्री सत्यनारायण टाटीवाला ने समारोह का संचालन किया। धन्यवाद श्री विष्णु गर्ग ने दिया। जयपुर में सरगंगाराम जयन्ती राष्ट्रीय मंत्री डॉ. गिरिराज प्रसाद मित्तल. का मुख्य आतिथ्य में प्रकाश स्कूल में हुआ।

अग्रोहा में हनुमान-जयन्ती सम्पन्न

विगत दिनों अग्रोहा-विकास-ट्रस्ट के अग्रोहाधाम परिसर में हनुमान-जयन्ती के शुभअवसर पर द्वारकापुरी धाम का शिलान्यास परमपूज्य श्री गुरु शरणानन्द जी महाराज के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

इस निर्माण-कार्य में लगभग एक करोड़ रुपये खर्च होंगे। हजारों अग्रबंधु इस अवसर पर वहाँ उपस्थित थे। तत्पश्चात् अग्रोहा में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सभा सम्पन्न हुई।

इस सभा में पूरे देश में युवा-समितियों के गठन का निर्णय भी लिया गया।

महाराष्ट्र अग्रवाल सम्मेलन ने भिकारीलाल अग्रवाल को सम्मानित किया

जलगाँव जामोद 18 अप्रैल 2005) आज से करीब 5100 साल पूर्व महाराजा अग्रसेन जी जिन तीन मुख्य तत्वों को अंगीकार किया था—जनतंत्र, समाजवाद एवं शांति-सद्भाव, इन तत्वों को अपने जीवन में भिकारीलाल जी अग्रवाल ने स्वीकार किया और उन्हीं के अनुसार उन्होंने समाजसेवा की। उनके इन कार्यों का हम आज सत्कार कर रहे हैं। ऐसे गौरवपूर्ण उद्गार पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री विजय जी गोयल ने महाराष्ट्र अग्रवाल-सम्मेलन के 16वें प्रान्तीय अधिवेशन में नवरत्नों के सत्कार-समारोह के अवसर पर प्रकट किए। शेगाँव उपाधि से इस प्रान्तीय अधिवेशन में पूर्व केन्द्रीय मंत्री विजय गोयल तथा चंडीगढ़ के सांसद पवन बंसल, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार चौधरी, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास गुप्ता के हाथों उन्हें यह बहुमान प्रदान किया गया। इस अवसर पर उनके सुपुत्र श्री गोविन्द अग्रवाल एवं सभी रिश्तेदार भी उपस्थित थे। ■

एक अद्भुत आयोजन

क्या कभी किसी ने सोचा होगा कि गिरिवासी वनवासी बालक-बालिकाएँ नगरों के परिवार में एक दिन नहीं, लगातार 3 दिन से 4 दिनों तक निवास करेंगे, इतना ही नहीं, उन्हें इस अवसर पर नगरवासियों का ऐसा प्यार मिला जैसे वे अपने परिवार के ही बच्चे हों। यह अद्भुत कार्य किया वनबंधु परिषद के एकल विद्यालय के पूर्व कालीन कार्यकर्त्ताओं ने इन्दौर में होने वाले कुंभ के अवसर पर। इसके साथ श्रीहरि-सत्संग-समिति के लगभग 1000 कथाकार तथा अन्यों को मिलाकर 4000 हजार कार्यकर्त्ता अपना पूर्ण समय देकर इस शिक्षा और संस्कार के कार्य में दूर-दराज के वनवासी क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। इन्दौर नगर में होने वाले कार्यक्रम की एक विशेषता और थी कि 4000 कार्यकर्त्ताओं की भोजन व्यवस्था के लिए इन्दौर के अधिकतर परिवारों से 20-20 रोटियाँ एकत्रित करके सामूहिक भोजन कराया जाता था। रात्रि का भोजन, प्रातःकाल का जलपान परिवारों के यहाँ होता था। सारे नगर को 20 क्षेत्रों में बाँट कर यह कार्य विभिन्न महापुरुषों को दिया गया था।

कार्यक्रम की रचना इस प्रकार की गई थी कि मार्गदर्शन भी प्राप्त हो। यहाँ से प्रेरणा लेकर लोग जाये तथा परिवारों में सम्पर्क के माध्यम से एक ऐसी छाप छोड़ी जाये जो सदैव स्मरण रहे। शोभा-यात्रा को प्रेरणा-यात्रा का नाम देकर उसे आकर्षित ढंग से बनाया गया। अपनी-अपनी पारम्परिक वेशभूषा में जब सड़क पर ये 3 मार्गों से चले एवं पुनः तीनों मिलकर एक जगह पर मिले, मानो संगम का रूप हुआ।

20 नगरों में रात्रि में एक समय ही सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। एक अन्य कार्यक्रम कल्पना से परे की बात थी कि प्रदेश के अनुसार एक दिन रात्रि का भोजन उसी समाज और उसी प्रदेश के बंधु के यहाँ रखा गया था।

अंत में एक दिन ज़ी टी.वी. के सौजन्य से रंगा-रंग कार्यक्रम प्रदर्शित किया गया, जो अत्यन्त सफल रहा। कुल मिलाकर संस्था का इस प्रकार का कार्यक्रम 3 दिवसीय था जिसमें पूज्य स्वामी सत्यैा मिश्रा जी तथा पूज्य साध्वी ऋतंभरा और श्री अशोक सिंघल जी का कार्यकर्त्ताओं को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। ■

श्री महाराजा अग्रसैन धर्मार्थ सेवा संस्थान बी-1527, शास्त्री नगर, दिल्ली का चुनाव

हमारे संस्थान की वार्षिक आम सभा में दिनांक 24 अप्रैल, 2005 रविवार को निम्न कार्यकारिणी के पदाधिकारी व सदस्य निर्वाचित घोषित किए गएः- मुख्य संरक्षक- श्री अमरनाथ दीवान मो. 9350260000 प्रधान- श्री राजकुमार मित्तल, ई-151 शास्त्री नगर मो. 9811345824, उपप्रधान- श्री रतनलाल बंसल, ई-2/197, शास्त्री नगर, मो.-9810344685, मंत्री- श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, बी-1843, शास्त्री नगर, मो. 9811266165, सहमंत्री-श्री जयदेव गुप्ता, ई-142, शास्त्री नगर, मो. 9810077307, कोषाध्यक्ष-श्री ओम प्रकाश गुप्ता, ई-260 शास्त्री नगर मो. 9811239630 सदस्य- श्री रामप्रकाश मित्तल, श्री जयभगवान गर्ग, श्री रामकरण गोयल, श्री राजपाल गोयल, श्री ओमप्रकाश जिन्दल, श्री नत्थुराम जिन्दल ■

अग्रवाल समाज राजस्थान के चुनाव

जयपुर 3 मई। अग्रवाल समाज राजस्थान के चुनाव निम्नलिखित सम्पन्न हुएः- अध्यक्ष- श्री प्रेम पौद्दार, कार्यकारी अध्यक्ष- श्री रामावतार सिंघल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष- श्री रामनिवास गोयल, संगठन मंत्री-श्री कन्हैयालाल मित्तल व श्री प्रभुदयाल बंसल, महामंत्री- श्री चौथमल भगैरिया कोषाध्यक्ष- शैलेश बबूना, उपमहामंत्री- श्री शिवशंकर गर्ग, श्री कमल गोयल, श्री पवन अग्रवाल व श्री अशोक गर्ग, संरक्षक-श्री राधेश्याम गोयलव डॉ. गिरिराज मित्तल ■

अग्रवाल सभा, अग्रवाल भवन, 1,बी.बी. रोड, बालारंगापुरम, मदुरई-625005 का चुनाव

प्रेजीडेंट : श्री जयभगवान गुप्ता; वाईस प्रेजीडेंटः श्री सुरेश कुमार गुप्ता, श्री नरसिंहदास गुप्ता; सैक्रेट्री : श्री राजेश कुमार सिंघल; ज्वाईंट सेक्रेटरीः श्री सुभाषचंद गुप्ता; कोषाध्यक्ष : श्री गणेशलाल बंसल; इंटरनल ऑडिटर : श्री पवन कुमार बंसल। ■

'क्लीनिकल यूजफूल हर्बल ड्रग्स' पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली 13 मई 2005-अग्रोहा-विकास-ट्रस्ट दिल्ली प्रदेश द्वारा गठित 'अग्रणी' प्रोफेसर एवं वैज्ञानिक इकाई के संयोजक एवं प्रिंसिपल कॉलेज आफ फार्मेसी के प्रो. एस. एस. अग्रवाल द्वारा लिखित 'क्लीनिकल यूजफूल हर्बल ड्रग्स' पुस्तक का लोकार्पण दिल्ली के उपराज्यपाल श्री बी.एल. जोशी ने अपने निवास-स्थान पर एक समारोह आयोजित कर विधिवत विमोचन किया।

श्री जोशी जी ने इस पुस्तक की प्रस्तुति एवं सामग्री को जनकल्याण के स्वास्थ्य के लिए विशेष उपयोगी बताते हुए काफी सराहना की और कहा कि निःसंदेह यह पुस्तक क्लीनिकल जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान और आदर प्राप्त करेगी।

प्रो. एस.एस. अग्रवाल ने इस पुस्तक के लेखन और सामग्री पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस पुस्तक के लेखन-सामग्री और प्रस्तुतीकरण में आयुर्वेदाचार्य डा. बी.पी. तमराकर एवं भेषजअभिज्ञानी श्री एम. पारीधवी ने भरपूर सहयोग दिया है। इस पुस्तक में 150 जड़ी-बूटी औषधियों का विवरण दिया गया है।

इस अवसर पर आई.पी. यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर प्रो. के.के. अग्रवाल, अग्रोहा-विकास-ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री नरेश कुमार गुप्ता आदि भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

अग्रवाल युवा समाज (पंजी.) कोटला मुबारकपुर का चुनाव

अग्रवाल युवा-समाज कोटला मुबारकपुर नई दिल्ली के द्विवार्षिक चुनाव 2 अप्रैल 2005 को श्री हरीश गर्ग, एडवोकेट (चुनावाधिकारी) की देख-रेख में सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन हुआः- अध्यक्ष- श्री अमित गोयल, उपाध्यक्ष- श्री नटवर नागर गर्ग, श्री मनोज गुप्ता, महामंत्री-श्री पवन कुमार मित्तल, मंत्री-श्री सुनील मित्तल, कोषाध्यक्ष- श्री राजकुमार मित्तल, प्रचार मंत्री- श्री विमल गोयल ■

विवाह योग्य युवकों की सूची

व-281 कृष्ण कुमार गर्ग, 31, मैट्रिक, 160 सें.मी., सांवला, 50 किलो, दुकानदारी, आय-10,000/-, तीन भाई, चार बहिनें, सभी विवाहित, माता नहीं, पिता की किराना दुकान, आय 10,000/- हरियाणा निवासी, पताः- श्री महावीर प्रसाद, शुभम जनरल स्टोर, 116 ए, यू.यू. ब्लाक, पीतमपुरा, दिल्ली-88 (☎ : 27343715) (तलाकशुदा/ सर्विस भी विचारणीय)

व-318 अजय गर्ग, 26, बी.कॉम., कम्प्यूटर कोर्स, 170 सें.मी., गेहुआँ, 70 किलो, कम्प्यूटर का काम, आय-10,000/-, एक भाई, एक बहिन, बहिन विवाहित पिता की दुकान, आय-15,000/-, हरियाणा निवासी, पता : श्री अरविंद कुमार, हनुमान फ्लोर मिल, दुकान नं. 33, ब्लाक ए-5, डीडीए मार्केट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63 (☎ : 25260340)

व-331 मोहन लाल गोयल, 32, दसवीं, 157 सें.मी., साफ, 80 किलो, व्यापार, आय-9000/-, दो बहिनें, दोनों विवाहित, पिता का व्यापार, आय-3000/-पता : श्री विष्णुराम गोयल, 35/78, मीना अपार्टमैंट, आई.पी. एक्सटैंशन, दिल्ली-92 (☎ : 55630537)

व-349 नितिन अग्रवाल, कसंल, 27, अंडर ग्रेजुएट, 168 सें.मी., गेहुआँ, 50 किलो, निजि क्लाथ बिजनिश, आय-20,000/-, एक बहिन विवाहित, पिता कमीशन एजेंट, आय-15,000/-, पता : श्री चेतन कुमार अग्रवाल, 3157 थर्ड फ्लोर, फाटक नानकचंद, मौहल्ला दसियान्, हौजकाजी, दिल्ली-6 (☎: 23994291 व 9312243016)

व-364 रजत जिन्दल, 25½, एम.कॉम., 170 सें.मी., गोरा, 65 किलो, संयुक्त व्यवसाय, आय-एक लाख मासिक, दो भाई, एक विवाहित, एक बहिन, विवाहित, पता : श्री विकास गुप्ता, गुप्ता जी गारमैंट्स, मेन बाजार, बदरपुर, नई दिल्ली-44 (☎: 9818523900 व 9312301320) (व्यापारिक-उच्च परिवार)

व-374 विनीत गोयल, 26, बारहवीं, ड्राफ्टसमैन कोर्स 166 सें.मी., गोरा, 68 किलो, सर्विस, आय-16,000/-+ कमीशन, पिता नहीं, हरियाणा निवासी, पता : श्री पी.सी. सिंघल, 16/18, ईस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26 (☎ : 25438790)

व-378 राजेश अग्रवाल, ऐरन, 26, बी.ए., कम्प्यूटर, 170 सेंमी., गोरा, 65 किलो, रेडीमेड गारमैंट व्यवसाय, आय-45,000/-, पिता का भी रेडीमेड गारमैंट व्यवसाय, आय-20,000/-, खुरजा निवासी, पता : श्री आर.सी. अग्रवाल, शॉप नं.4, IX/6902 महावीर चौक, अशोक गली, गांधी नगर, दिल्ली-31 (☎ : 22090045, व 22072808)

व-385 विशाल बगड़िया, गर्ग, 26, बी.कॉम., 170 सें.मी., गेहुआँ, 62 किलो, आसनसोल में मोटर कार एसैसरीज का व्यापार, आयः 50,000/- एक भाई, विवाहित, पिता का भी आसनसोल में बिजनिश, आयः 50,000/- आसनसोल (प.बंगाल) निवासी, पताः द्वारा श्री श्यामसुन्दर अग्रवाल, के.डी. 231, पीतमपुरा, दिल्ली-88 (☎ : 27313432 व 23924589)

व-386 अमित गुप्ता, जिंदल, 23, बी.कॉम (पास), कम्प्यूटर डिप्लोमा, 167 सें.मी., 60 किलो, गेहुआँ, बिजनिश (शिपिंग एजेंट), आय-20,000/-, पिता का बिजनिश (शादी कार्ड), आय-10,000/-, सोहना निवासी, एक भाई, एक बहिन, बहिन विवाहित, पता : श्री महेश चंद गुप्ता, 285 फाटक करोड़, अजमेरी गेट, दिल्ली-6 (☎ : 23237460, व 9212000355)

व-387 उमेश गर्ग, 21, बारहवीं, बी.कॉम कर रहे, गोरा, 160 सें.मी., 88 किलो, टीचर, आय-10,000/-, तीन बहिनें, एक विवाहित, पिता का दाल मिल, आयः 60,000/-झज्जर निवासी, पता : श्री रामबिलास गर्ग, टी-208 इंदिरा कालोनी, नरेला, दिल्ली-40 (☎ : 55790021)

व-388 संजय गोयल, 32, बारहवीं, साफ, 176 सें.मी, 65 किलो, जनरल स्टोर + पी.सी.ओ. शॉप, आय-30,000/-, दो भाई, एक बहिन, पिता की सरकारी सर्विस, आयः 20,000/-हिसार निवासी, पता : श्री ओम प्रकाश गोयल, 5111 ए, गली नं. 18, शान्ति मौहल्ला, कपड़ा मार्केट, गाँधी नगर, दिल्ली-31 (☎ : 22044880, 22467704 व 22449148)

व-389 विनय गुप्ता, कुच्छल, 28, एम.ए. (इको.) बी.कॉम जी निट, साफ, 170 सें.मी, 65 किलो, सरकारी सर्विस (कम्प्यूटर), आय-11,000/-, एक बहिन, विवाहित, पिता की भी सरकारी सर्विस, आयः 20,000/-हरियाणा निवासी, पता : श्री वी.के.

गुप्ता, बी-8, हिल अपार्टमैंट, प्लाट-17, सैक्टर-13, रोहिणी, दिल्ली-85 (☎ : 27860106) (सर्विस)

व-390 विवेक गर्ग, 25, बारहवीं, साफ, 155 सें.मी., 53 किलो, अपनी डाक्टर की दुकान, आय-17,000/-, दो भाई, एक विवाहित, एक बहिन, पिता की सरकारी सर्विस, आयः 9000/-दिल्ली निवासी, पता : श्री सुभाषचंद, 25/251 आर्य नगर, काठमण्डी, सोनीपत (☎ : 95130-2800344)

मंगली युवक

व.मं.-102 पवन कुमार बंसल (आंशिक मंगली), 28, एम.ए., एल.एल.बी, 168 सें.मी., 55 किलो, सांवला, एडवोकेट + बीमा एजेंट, आय-10,000/- ,तीन भाई, एक विवाहित, दो बहिनें, एक विवाहित, पिता की आय-दस अंकों में, राजस्थान निवासी, पता : श्री कैलाश चंद बंसल, बंसल भवन, दुगड़डा, जिला पौड़ी (उतरांचल) (☎ :01382-251227) (न्यायिक सेवा, सरकारी सर्विस)

व.मं.-103 अमित गोयल, 27, बी.कॉम.(पास), कम्प्यूटर कोर्स, 173 सें.मी., गोरा, 50 किलो, बिजनिश, आय-15,000/-, एक भाई, पिता का भी बिजनिश, पता : श्री सुभाष चंद गोयल, जी-17/41, सैक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली-85 (☎ : 27859642 व 20506118) (टीचर)

विधुर/परित्यक्त

व.वि. 14 विधुर, विनोद मित्तल, 42, एम.ए., एल.एल.बी., सिरसा में कम्बल व कपड़े का थोक व्यापार, आय-55,000/-, पूर्व पत्नी से 12 वर्षीय एक लड़का व 8 वर्षीय एक लड़की, पता : द्वारा श्री पुरुषोत्तम मित्तल, 53, सहयोग अपार्टमैंट, पीतमपुरा (निकट रानी बाग) दिल्ली-34 (☎ : 9810217042, 27016815 व 27026115) (निःसंतान विधवा, तलाकशुदा या बड़ी उम्र की कुंवारी)

व.प. 21 परित्यक्त, निःसंतान, अजय अग्रवाल, गर्ग, 33, पोस्ट ग्रेजुएट, 163 सें.मी., गेहुआँ, 62 किलो, ट्रॉंसपोर्टेशन बिजनिश, आय-55,000/-, एक भाई, चार बहिनें, सभी विवाहित, हरियाणा निवासी, पताः श्री जयकिशन अग्रवाल, ए-109, करमपुरा, शिवाजी मार्ग, नई दिल्ली-15 (☎ : 25119634 व 9891148834)

व.प. 22 परित्यक्त, निःसंतान, लोकेश गोयल, 29, ग्यारहवीं, 155 सें.मी., साफ, 65 किलो, पिता के साथ किरयाना शॉप, आय-15000/-, एक भाई, एक बहिन, दोनों विवाहित, हरियाणा निवासी, पूर्व शादी 2001 में, पताः श्री बिजेन्द्र कुमार गोयल, 210 ई, शाहपुर जट (खेल गाँव) नई दिल्ली-49 (☎ : 26496152 व 26682841)

विवाह योग्य युवतियों की सूची

क-89 लक्ष्मी अग्रवाल, ऐरन, 32, एम.ए.,कम्प्यूटर लाइब्रेरियन, 155 सें.मी., 48 किलो, गोरा, सरकारी सर्विस, आय-8,000/- ,एक भाई, दो बहिनें, विवाहित, पिता का गारमैंट बिजनिश, आय-30,000/- पता : श्री आर.सी. अग्रवाल, शॉप नं. 4, IX/6902 महावीर चौक, अशोक गली, गांधी नगर, दिल्ली-31 (☎ : 22090045, व 22072808)

क-253 संगीता केजरीवाल, बंसल, 23, सेक्रेट्रियल प्रैक्टिस, 158 सें.मी., 60 किलो, गेहुआँ, एक भाई, दो बहिनें, सभी विवाहित, पिता रिटायर्ड, आय-9000/-, खुरजा निवासी, पता : श्री एस.के. केजरीवाल, 71 रिषी अपार्टमैंट, सैक्टर-9, रोहिणी, नई दिल्ली-85 (☎ : 9891950827, व 9810114436) (सरकारी सर्विस/ व्यापारी)

क-301 प्रीति गुप्ता, कंसल, 24, एम.एस.सी. मैथ्स (आनर्स), बी.एँड., 162½ सें.मी., 45 किलो, गोरा, पी.जी.टी. (मैथ्स) आयः 8000/- एक भाई, तीन बहिनें, दो विवाहित, पिता की सरकारी सर्विस, आय-20,000/-, हरियाणा निवासी, पता : श्री प्रेमचंद कंसल, बी.1/14, सैक्टर 11, रोहिणी, दिल्ली-85 (☎: 27933563)(सर्विस)

क-305 स्वाति, जिंदल, 26, एम.ए. (इंगलिश), फैशन डिजाइनिंग, एम.बी.ए. 160 सें.मी., 50 किलो, गोरा, सर्विस, आयः 18,000/- एक भाई, दो बहिनें, पिता का बिजनिश (स्टोन क्रेशर), आय-50,000/-, पता : श्री विजय कुमार, डी-172, साकेत, नई दिल्ली-17 (☎: 9871235039) (प्रोफेशनली क्वालिफाइड)

क-306 सुमन अग्रवाल, गोयल, 33, एम.कॉम.बी.एड, 152 सें.मी., 48 किलो, गोरा, एक भाई, पिता रिटायर्ड, पेंशनः 9500/-, पता : श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, ई-6, रश्मि अपार्टमैंट, हर्ष विहार, पीतमपुरा, दिल्ली-34 (☎: 27013720) (अच्छी सर्विस)

क-307 रीता रानी, कश्यप (वैश्य), 32, एम.ए. (सोशोलोजी) 45 किलो, गोरा, प्रा. सर्विस, तीन भाई, एक विवाहित, एक बहिन विवाहित, पिता रिटायर्ड, भागलपुर (बिहार) निवासी पता : द्वारा श्री प्रकाश कुमार, 24, पाकेट-1, मार्केट, मयूर विहार फेस-1, दिल्ली-91(☎: 9810119501)

क-308 शालू बंसल, 27½, बारहवीं, 160 सें.मी., 56 किलो, गेहुआँ-साफ, एक भाई, विवाहित, पिता की आय

16000/-, हरियाणां निवासी पता : श्री आर.एम. बंसल, टी-108, शुक्र बाजार, ओम विहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59 (☎: 25335812)

क-309 नूतन कुमारी सिंहल, 26, बी.ए.बी.एड., 154 सें.मी., 43 किलो, साफ, टीचर, आयः 3500/-, दो भाई, पिता बैंक मैनेजर, आय-25,000/-, जिला गाजियाबाद निवासी पता : श्री आर.के. सिंहल, एच. 25/1 नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 (☎: 22321137)

क-310 सुमिति गर्ग, 24, एम.कॉम, 148 सें.मी., गोरा, 45 किलो, स्कूल सर्विस, (कम्प्यूटर) आयः 8000/-, एक बहिन, पिता की सरकारी सर्विस, आयः 22,000/-, हरियाणा निवासी पता : श्री के.के. गर्ग, म.नं. 92, टाईप-IV नार्थ वैस्ट मोती बाग, नई दिल्ली-21 (☎: 24106980)

क-311 दीक्षा गर्ग, 26, बी.एस.सी., 159 सें.मी., साफ, 45 किलो, अस्पताल में सर्विस, आयः 8000/-, दो भाई, दो बहिनें, पिता की आय, 10,000/-, पता : श्री दिनेश कुमार गुप्ता, ए-2, गली नं. 22, महेन्द्रा पार्क, दिल्ली-33 (☎: 27639913) (सर्विस)

क-312 प्रेरणा सिंघल, 26, एम.ए., बी.एड., 165 सें.मी., गेहुआँ, 45 किलो, होशंगाबाद में अस्थाई टीचर, आयः 8500/-, एक भाई, विवाहित, पिता बैंक मैनेजर, आय-25,000/-, उ.प्र. निवासी, पता : श्री जी.पी. सिंघल, बी-42, दशरथपुरी, पालम-द्वारका रोड, नई दिल्ली-45 (☎: 25392049) (सर्विस)

क-313 मृदला गुप्ता, सिंघल, 33, एम.ए., 160 सें.मी., गोरा, एक भाई, एक बहिन, बहिन विवाहित, पिता का मैडिकल स्टोर, आयः 15,000/-पता : द्वारा श्रीमती सर्वेश वार्ष्णेय, मै. एस.के. मोटर्स, शिव चौक, छीपी टेंक, मेरठ (☎: 2647809 व 9412109525) (उच्च बिजनिशमैन, तलाकशुदा भी स्वीकार्य)

क-314 मीतु गोयल, 21, बी.ए. (हिस्ट्री आनर्स), 158 सें.मी., गेहुआँ, 48 किलो, दो भाई, पिता का व्यवसाय आयः 30,000/-, राजस्थान निवासी, पता : श्री सोहनलाल , ए-46, बापू पार्क, कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली-3 (☎: 9810091470)

क-315 अंजू गुप्ता, गोयल, 25½, बी.ए. पास 165 सें.मी., गेहुआँ, 46 किलो, दो भाई, एक विवाहित, एक बहिन विवाहित, पिता रिटायर्ड, आयः 15,000/-, हरियाणा निवासी, पता : श्री श्याम बाबू गुप्ता, 68 पुरानी अनारकली, कृष्णा नगर, दिल्ली-51 (☎: 22511916)

क-316 अनिता गर्ग, 26, एम.कॉम, सी.एस. (इन्टर) 157 सें.मी., गोरा, 66 किलो, दो भाई, एक विवाहित, दो बहिनें, दोनों विवाहित, पिता का व्यवसाय, आयः 30,000/-, यू.पी. निवासी, पता : द्वारा श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल, ए-46, बापू पार्क, कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली-3 (☎: 9810091470)

क-317 आंशु गर्ग, 28, जे.बी.टी., एम.ए., 159 सें.मी., साफ, 50 किलो, प्राइमरी टीचर, आयः 8000/- दो भाई, एक बहिन, माता की आयः 10,000/-, पिता की सरकारी सर्विस, आयः 15,000/-, पता : श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता, डी-14, लार्ड कृष्णा रोड, आदर्श नगर एक्सटैंशन, दिल्ली-33 (☎: 27679583) (सर्विस)

मंगली युवतियाँ

क.मं.-104 दीपा गुप्ता, मित्तल, (आंशिक मंगली) 29, एम.कॉम, एम.सी.ए. 152 सें.मी., गेहुआँ, 50 किलो, एच.सी.एल. कं. में साफ्टवेयर इंजीनियर, आयः 18,000/- एक भाई, एक बहिन, पिता की अपनी फैक्टरी, आय-40,000/-, खुर्जा निवासी, पता : श्री आर.पी. गुप्ता, 553 जोशी रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-5 (☎ : 23550911) (इंजी/एम.बी.ए./सी.ए.)

क.मं.-109 रीतू सिंघल 25, एम.ए. (प्रथम वर्ष) कर रही, 158 सें.मी., साफ, 55 किलो, दो भाई, एक विवाहित, एक बहिन, विवाहित, पिता नहीं, पता : श्री दीपक गुप्ता, जे-88, जे-89, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली-65 (☎ : 55680256, 55637006 व 9811529985)

क.मं.-110 रूपा ऐरन, 25, बी.कॉम, (पास) 157 सें.मी, गेहुंआ-साफ, 38 किलो, एक भाई, दो बहिनें, एक बहिन विवाहित, पिता नहीं, जिला झज्जर निवासी, पता : श्रीमती मूर्ति देवी ऐरन द्वारा श्री अक्षय कुमार, 244, साउथ भोपा रोड, नई मंडी, (निकट अनिता टायर फैक्टरी) मुजफ्फरनगर (यू.पी.) (☎ : 0131-2600717)

क.मं.-111 प्रिया गुप्ता, गर्ग, 23, बी.कॉम. (पास) सी एंड टी. डिप्लोमा, 158 सें.मी, गोरा, 50 किलो, दो भाई, पिता का बिजनिश, आयः 10,000/-हरियाणा निवासी, पता : श्री मोहनलाल, 87, गली जटवाड़ा, पुल मिठाई, दिल्ली-6 (☎ : 9871056501) (सर्विस)

क.मं.-112 सुनीता अग्रवाल, गर्ग, 24, बी.कॉम, (पास), कम्प्यूटर, 155 सें.मी, गेहुंआ, 45 किलो, तीन भाई, दो विवाहित, पिता का व्यापार, आयः 10,000/-, यू.पी. निवासी, पता : श्री करनपाल अग्रवाल, ओ-50, गणेश मार्ग, कृष्ण विहार, दिल्ली-41 (☎ : 55481296)

रजिस्ट्रेशन नं0-23953/73 ■ पोस्टिड एट लोधी रोड ऑन 7-8 एवरी मंथ ■ नई दिल्ली पोस्ट रजि ■ डी एल-14010/2003.4.5

व्रत और त्यौहार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् 2062

7 जून से 22 जून 2005 तक

तिथि	वार	दि0	व्रत/-त्यौहार
प्रतिपदा	मंगल	7	
द्वितीया	बुध	8	चन्द्र-दर्शन
द्वितीया	गुरु	9	द्वितीया तिथि वृद्धि
तृतीया	शुक्र	10	महाराणा प्रताप-जयन्ती
चतुर्थी	शनि	11	विनायक चतुर्थी
पंचमी	रवि	12	
षष्ठी	सोम	13	विन्ध्यवासिनी-पूजा
सप्तमी	मंगल	14	मिथुन-संक्रान्ति
अष्टमी	बुध	15	
नवमी	गुरु	16	
दशमी	शुक्र	17	गंगा दशहरा
एकादशी	शनि	18	निर्जला एकादशी व्रत
द्वादशी	रवि	19	प्रदोष-व्रत, चम्पक द्वादशी
त्रयोदशी	सोम	20	
चतुर्दशी	मंगल	21	वर्षा ऋतु शुरू, सूर्य दक्षिणायन
पूर्णिमा	बुध	22	सन्त कबीरजयन्ती, वट सावित्री-व्रत

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

23 जून से 6 जुलाई तक

तिथि	वार	दि0	व्रत/त्यौहार
प्रतिपदा			गुरु हरगोविन्द जन्मदिवस
द्वितीया	गुरु	23	द्वितीया तिथि क्षय
तृतीया	शुक्र	24	
चतुर्थी	शनि	25	गणेश-चतुर्थी (चन्द्रोदय 22.36) पंचक प्रारंभ 22.39
पंचमी	रवि	26	पंचक
षष्ठी	सोम	27	पंचक
सप्तमी	मंगल	28	कालाष्टमी, पंचक,
अष्टमी	बुध	29	पंचक
नवमी	गुरु	30	पंचक समाप्त 6.06
दशमी	शुक्र	1	
एकादशी	शनि	2	योगिनी एकादशी व्रत,
द्वादशी	रवि	3	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	सोम	4	
चतुर्दशी	मंगल	5	
अमावस्या	बुध	6	अमावस्या

पानी बचाओ-आज की सबसे बड़ी आवश्यकता

-अर्जुन कुमार, महामंत्री, राष्ट्रीय वैश्य-परिषद

कनॉट प्लेस क्षेत्र में हेली रोड पर महाराजा अग्रसेन के नाम से एक बहुत बड़ी बाबड़ी बनी हुई है। दिल्ली की ऐतिहासिक बाबड़ियों में इसे सर्वश्रेष्ठ बावड़ी का श्रेय प्राप्त है। यह बाबड़ी महाराजा अग्रसेन के काल से हजारों वर्ष बाद और आज के समय से सैंकड़ो वर्ष पूर्व की है। एक समय था जब यह बाबड़ी विशाल जल-भण्डार थी। इसी तरह महरौली में खुदाई में प्राप्त एक शिलालेख (पुरातत्व की भाषा में इसे सारबन अभिलेख कहा गया है।) मिला है। इस शिलालेख में अग्रोदक दो वणिकों के द्वारा जनहित में कार्य किए जाने का उल्लेख है, जिसमें कुँए का निर्माण भी है।

हमारे पूर्वजों द्वारा बाबडियों एवं कुँओं का निर्माण एक आवश्यकता मानकर किया होगा। जलसंचय उस समय भी आवश्यक था और आज भी है। दूरदृष्टि वाले विद्वान् तो यहां तक कहते हैं कि भविष्य में कोई युद्ध हुआ तो वह पानी के कारण होगा, लेकिन हम लोग इस दिशा में पूरी तरह उदासीन हैं। दिल्ली में पानी का दुरुपयोग भी बहुत हो रहा है। दूसरी तरफ राजस्थान, महाराष्ट्र, उड़ीसा और तमिलनाडू के कई क्षेत्र जल-संकट से पीड़ित हैं। पिछले दिनों मैं जालना (महाराष्ट्र) गया

-शेष देखिये पृष्ठ 17 पर

मंगल-मिलन

डी-36 साउथ एक्सटैंशन भाग-एक
नई दिल्ली-110049

स-65-सम्पादक
मुमुक्षु (त्रैमासिक),
(श्री पुरुषोत्तमदास मोदी),
मुमुक्षु भवन सभा, अस्सी,
वाराणसी-221005 (उ0प्र0)

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रामावतार गुप्त के लिए डी. आर. प्रिन्टर्स एण्ड कन्वर्टर्स प्रा. लि., ए-31, सैक्टर-9, नोएडा में मुद्रित। स्वत्वाधिकारी रामेश्वरदास गुप्त धर्मार्थ ट्रस्ट, डी-36, साउथ एक्सटैंशन भाग-एक, नई दिल्ली-49